अहो ! सर्वोत्कृष्ट शांत रसमय सन्मार्ग—

अहो ! ते सर्वोत्कृष्ट शांतरसप्रधान मार्गना मूळ सर्वज्ञदेवः—

अहो ! ते सर्वोत्कृष्ट शांतरस सुप्रतीत कराव्यो

एवा परम कृपाळु सद्‌गुरुदेव—

आ विश्वमां सर्वकाळ तमे जयवंत वर्तो, जयवंत वर्तो.

—श्रीमद् राजचंद्र

☆

ज्ञाते ह्यात्मनि नो भूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते ।
अज्ञाते पुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकम् ॥

—श्री अध्यात्मसार

आत्माने जाण्यो तो पछी बीजुं कंई जाणवा योग्य बाकी रहेतुं नथी, अने जो आत्माने जाण्यो नथी तो पछी बीजुं सर्व ज्ञान निरर्थक छे.

ब्रह्मस्थो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म प्राप्नोति तत्र किं चित्रम् ।
ब्रह्मविदां वचसाऽपि ब्रह्मविलासाननुभवामः ॥

—श्री अध्यात्मसार

ब्रह्मरूप शुद्ध सहजात्मस्वरूपमां रहेला ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मने पामे, तेमां शुं आश्चर्य ? परंतु ब्रह्मज्ञानीना वचनथी पण अमे ब्रह्मना विलासने अनुभवीए छीए. अहो ! श्री सत्पुरुषनां वचनामृत !

ध्येयोऽयं सेव्योऽयं कार्या भक्तिश्च कृतधियास्यैव ।
अस्मिन् गुरुत्वबुद्ध्या सुतरः संसारसिन्धुरपि ॥

—श्री अध्यात्मसार

—श्रीमद् राजचंद्र

एगोहं नत्थि मे कोई नाहमण्णस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो अप्पाणमणुसासइ ॥

—संथारापोरिसी

हुं एक छुं. मारुं कोई नथी. हुं अन्य कोईनो नथी. ए प्रमाणे अदीन मनवाळो थईने हुं पोते पोताने शिखामण आपुं छुं.

एगो मे सस्सदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥

—श्री भावपाहुड

एक ज्ञानदर्शन लक्षणवाळो शाश्वत आत्मा ते ज मारो छे; बाकीना सर्व संयोगजन्य विनाशी पदार्थो माराथी पर छे, भिन्न छे.

संजोगमूला जीवेण पत्ता दुःखपरंपरा ।
तह्मा संजोगसंबंधं सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥

—श्री मूलाचार ४९

आ जीवने परद्रव्यना संयोगथी दुःखपरंपरा प्राप्त थई छे; माटे मन वचन कायाथी सर्व संयोगसंबंधोने हुं तजुं छुं.

ममत्तिं परिवज्जामि णिममत्तिमुवट्ठिदो ।
आलंबणं च मे आदा अवसेसाइं वोसिरे ॥

—श्री मूलाचार

शरीरादि सर्व परमांथी हुं ममत्वने अत्यंत तजी दउं छुं. अने निर्ममताने, अकिंचनभावने धारण करुं छुं, आत्मा ज एक मारुं आलंबन छे, बाकी सर्व परने हुं तजी दउं छुं.

अकिंचनोऽहमित्यास्व त्रैलोक्याधिपतिर्भवेः ।
योगिगम्यं तव प्रोक्तं रहस्यं परमात्मनः ॥

—श्री आत्मानुशासन

हुं अकिंचन, परमां ममता रहित छुं, एम अभ्यास कर. तेथी तुं त्रण लोकनो अधिपति थईश. परमात्मपद पामवानुं योगीओने गम्य एवुं आ रहस्य तने कह्युं छे.

अहमिक्को खलु सुद्धो दंसणणाणमइओ सदारूवी ।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि अण्णं परमाणुमित्तंपि ॥

—श्री समयसार ३८

आत्माथी ज प्रत्यक्ष एवी चैतन्यज्योति मात्र आत्मा ते हुं छुं. हुं एक छुं. सर्व अशुद्ध पर्यायोथी जुदो ज्ञानस्वरूपे अनुभवातो हुं सदा शुद्ध छुं. उपयोगलक्षणे सनातन स्फुरित एवो ज्ञानदर्शनमय छुं. सदा अरूपी छुं. तेथी भिन्न अन्य कांई पण, परमाणुमात्र पण मारुं नथी.

अहमिक्को खलु सुद्धो णिम्ममओ णाणदंसणसमग्गो ।
तह्मि ठिओ तच्चित्तो सव्वे एए खयं णेमि ॥

—श्री समयसार ७३

हुं आत्मा एक छुं. निश्चये शुद्ध छुं. परभावो अने परद्रव्योनो स्वामि नहि होवाथी तेमां ममता रहित छुं. अने ज्ञानदर्शनरूप सहज आत्मस्वभावे संपूर्ण छुं. ए सहज आत्मस्वरूपना ध्यानमां स्थित, ए ज चैतन्य अनुभवमां लीन थई आ सर्व कर्मनो, आस्रवोनो क्षय करुं छुं.

एकोऽहं निर्ममः शुद्धो ज्ञानी योगीन्द्रगोचरः ।
बाह्याः संयोगजाः भावा मत्तः सर्वेऽपि सर्वदा ॥

—श्री ईष्टोपदेश २७

चैतन्यस्वरूप एवो हुं आत्मा एक छुं. परमां ममता रहित छुं. द्रव्यकर्म भावकर्म रहित शुद्ध छुं, स्वपरप्रकाशक ज्ञानस्वरूपी पदार्थ छुं. योगीन्द्र भगवानना अतीन्द्रिय ज्ञाने करी गम्य छुं. द्रव्य कर्मना संयोगे प्राप्त जे शरीरादि बाह्य पदार्थो छे ते सर्व मारा स्वरूपथी सर्वदा भिन्न छे, पर छे.

न मे मृत्युः कुतो भीतिः न मे व्याधिः कुतो व्यथा ।
नाहं बालो न वृद्धो वा न युवैतानि पुद्गले ॥

—श्री ईष्टोपदेश २९

चैतन्यशक्तिरूप भाव प्राणोनो कदापि वियोग नहि थतो होवाथी मने मरण कदापि छे नहि, तो पछी मने मरणादिनो भय शानो? तेमज मने, चैतन्यस्वरूप शुद्ध आत्माने व्याधि छे नहि, तो तेनी पीडा शी? तेम हुं बाळक नथी, वृद्ध नथी, युवान नथी, ए सर्व अवस्था पुद्गलनी छे. हुं शुद्ध सहज आत्मस्वरूप छुं तेथी तेने ज भजुं छुं.

छूटे देहाध्यास तो, नहि कर्ता तुं कर्म,
नहि भोक्ता तुं तेहनो, ए ज धर्मनो मर्म.
ए ज धर्मथी मोक्ष छे, तुं छो मोक्षस्वरूप,
अनंत दर्शन ज्ञान तुं, अव्याबाध स्वरूप.
शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन स्वयं ज्योति सुखधाम,
बीजुं कहिये केटलुं ? कर विचार तो पाम.

—श्री आत्मसिद्धि

तथारूप असंग निर्ग्रंथपदनो अभ्यास सतत वर्धमान करजो.

असंगताथी परमावगाढ अनुभव थवा योग्य छे.

जे महात्माओ असंग चैतन्यमां लीन थया, थाय छे अने थशे तेने नमस्कार.

ॐ शांतिः

देहथी भिन्न स्वपर प्रकाशक परम ज्योतिस्वरूप एवो आ आत्मा तेमां निमग्न थाओ! हे आर्यजनो, अंतर्मुख थई, स्थिर थई ते आत्मामां ज रहो! तो अनंत अपार आनंद अनुभवशो.

जेणे त्रणे काळने विषे देहादिथी पोतानो कंई पण संबंध नहोतो एवी असंगदशा उत्पन्न करी ते भगवानरूप सत्पुरुषोने नमस्कार.

—श्रीमद् राजचंद्र

સાચું શરણ

ગઝલ–કવ્વાલી

જગતમાં જન્મવું મરવું! ત્રિવિધ તાપાગ્નિમાં બળવું!
ફરી ફરી દુઃખમાં ડૂબવું! કહો ક્યમ તેથી ઝટ બચવું? ૧

બચ્યા જે કોઈ મહાભાગી, વિદેહી જ્ઞાની વીતરાગી;
સ્વરૂપાનંદ પદરાગી, બચાવે એ જ સુખધામી. ૨

ઉપાધિ આગથી બચવા, સહજ નિજ શાંતપદ ઠરવા,
સમાધિ બોધિના સિંધુ, અહો! નૃપચંદ્ર જગબંધુ!! ૩

પ્રતિભા જ્ઞાનની ચમકી! અનુભૂતિ અતિ ઝળકી!
સમાધિ શાંતિ શી ઉલ્લસી! વિશુદ્ધિ સ્વાત્મની વિલસી! ૪

તજી કાયાતણી માયા, સ્વરૂપાનંદ પદ ધ્યાયા,
દશા સર્વોપરી પાયા, વિદેહી ચિદ્રમા રાયા. ૫

સ્વરૂપમાં પૂર્ણલય લાગી! રમણતા સ્વાત્મમાં જાગી!
ફળે કોઈ પૂર્ણ સદ્ભાગી, મુમુક્ષુ મુક્તિ અનુરાગી. ૬

તુંહિ તુંહિ સાર ત્યાં જાગે, અજપ એહિ લગન લાગે;
સહજ ચિદ્જ્યોતિ ઉર ભાસે, અનાદિ ભ્રાંતિ તમ નાસે. ૭

વચન અમૃત રસ ધારા, વિરલ મોક્ષાર્થિ ભજનારા,
સહજ નિજ આત્મપદ પામી, બને તે શીઘ્ર શિવગામી. ૮

प्रकाशकनुं निवेदन

ॐ

जय हो परमकृपाळु देवनी. जय हो सद्‌गुरु भगवंतनी.

अखंड स्वरूप ज्ञानी परमकृपाळु श्रीमद् राजचंद्रजीना परमभक्त मुमुक्षु बन्धु श्री अमीचंदभाईनो बेल्लारीथी सं. २०२५ना महा सुदमां मारा उपर पत्र आव्यो. तेमां तेओश्रीए पोतानी भावना लखी जणावी हती:–

'काव्य अमृत झरणां' पुस्तक के जेमां परमकृपाळु देव श्रीमद् राजचंद्रजीनां पदो-काव्यो तथा तेना अर्थ आत्मार्थी मुमुक्षु बन्धु पू. श्री रावजीभाई छगनभाई देसाईए सरळ गुजराती भाषा अने लिपिमां प्रकाश्या छे, ते पुस्तकने बाळबोध लिपिमां छपावी देजो. केमके दक्षिण भारतमां वसता मोटाभागना राजस्थानी बन्धुओ गुजराती भाषाना परिचित होय छे पण ते लिपिना परिचयी नहीं होवाथी गुजराती भाषानो आ ग्रंथ बाळबोध लिपिमां छपाववानो जरूर छे. आ कार्य माटेना खर्चनी रकम पण तेओश्रीए मोकली आपी हती. तेओश्रीनी भावनाने आकार आपवानो कोशिशमां हुं हतो तेवामां तो फागण सुदी पंचमीना रोज श्रीमद् राजचंद्र आश्रम हम्पीथी तार द्वारा समाचार मळ्या के:- श्री अमीचंदभाईए परमउपकारी प. पू. श्री सहजानंदघनजी समक्ष दीक्षा लीधी छे अने संथारो जाहेर कर्यो छे. आ अणधार्या समाचारथी आश्चर्य तो थयुं, परंतु ज्यारे फागण सुदी १४ना रोज हुं हम्पी पहोंच्यो त्यारे जाणवा

लाग्यो. अने हृदयमां एवी भावना जागी के हुं आनंदघन क्यारे थईश ? परमकृपाळुदेवनां वचनामृतोनो आछो परिचय हतो पण दृढता नहोती. परंतु प. पू. श्री सहजानंदघनजीना सतत सत्समागमथी परमकृपाळुदेवनी, तेमनां वचनोनी, अपूर्व श्रद्धापूर्वक पकड थई. ते एवी केः—'लागी लगनवा छोडी ना छूटे.'

पोते स्वभावे नम्र, शांत, मिलनसार, नीतिमान, दयाळु अने स्वाश्रयी आदरणीय गृहस्थ हता. बीजाओ प्रति सेवाभावी हता. कदी सेवा लेता नहीं. सत्संगीओ प्रति अगाध प्रेम-भाव धरावता हता. श्रीमद् राजचंद्र आश्रम अगास, वडवा, नार, आहोर आदि पवित्र स्थानोनी यात्रा करी हती.

संवत २०१७नी सालमां ज्यारे चोमाशी स्थिरता माटे प. पू. श्री सहजानंदघनजीए हम्पी रत्नकूट उपर गुफानिवास कर्यो त्यारे तेओश्रीए अत्यंत उल्लासपूर्वक खडे पगे सक्रिय भाग लीधो हतो. 'परमकृपाळुदेवना योग बळे अहीं श्रीमद् राजचंद्र आश्रमनी अगधारी स्थापना प. पू. श्री सहजानंदघनजीनी निश्रामां थई.' श्री अमीचंदभाई बेल्लारीथी वारंवार त्यां जता अने संभाळ राखता हता. मुख्यपणे सक्रिय शांत मुमुक्षु तरीके प्रथम भक्ति-भावना सह सत्संगलाभ लेता अने सेवा आपता हता. मने तेओश्रीनी प्रथम मुलाकात आ आश्रममां सत्संग-भक्ति योगे थई हती. बेल्लारी पण लई गया हता ज्यां खूब वात्सल्यभाव दाखव्यो हतो.

'संथारापूर्वक देह अने आत्माने जुदा पाडवानी' पोतानी उत्तम भावनाने सफळ करवा संवत २०२५ना फागण सुद ४ ने

कोई उपमा आपे तो ते परथी तेने ते वाणीनी केटली कदर-पिछान छे तेनी खबर पडे छे अने ते उपमाना भाव परथी आशय लक्षगत थतां तेनी मतिनुं माप पण नीकळे छे. श्रीमद् राजचंद्र कहे छे के जेनां एकेक वाक्यमां एकेक शब्दमां अनंत शास्त्रो समाई जाय एवी जिनेश्वरनी वाणीनो ख्याल, अज्ञजीवो ख्याल पामता नथी, तेनुं माहात्म्य जाणी शकता नथी. कोई विरला मुज्ञ संत जनोए ज तेनुं अचिंत्य माहात्म्य अने जगद्हितैषीपणुं जाण्युं छे, गायुं छे, वखाण्युं छे. १

५

[२९५/२६४] **सद्गुरु भक्ति रहस्य**

(दोहरा)

हे प्रभु ! हे प्रभु ! शुं कहुं, दीनानाथ दयाळ;
हुं तो दोष अनंतनुं, भाजन छुं करुणाळ. १

५

सद्गुरु भक्ति रहस्य

१. दीन अने अनाथ जीवो पर दया वर्षाववावाळा हे समर्थ ! हे प्रभो ! हुं आपनी समक्ष मारी पामर दशानुं शुं वर्णन करुं ? हे कृपाळु, हुं तो अनंत दोषनुं पात्र, दोषथी भरेलो, अपात्र छुं.

अनंत ज्ञान, दर्शन, सुख, शक्ति आदि सर्व आत्मऐश्वर्य, आत्मिक प्रभुता जेणे व्यक्त, प्रगट करी छे, एवा हे प्रभु. परमात्मा, हुं पामर मारी पतित अवस्था विषे आपने शुं कहुं ? सहजस्वरूपे तो आपना जेवी ज प्रभुता मारामां पण होवा छतां, अज्ञानादि दोषथी मारी ते प्रभुता अवराई रही छे, अने तेथी दीन, अनाथ, रंक जेवी मारी आ असहज अधम दशा थई छे. कर्मबंधनथी मुक्त शुद्ध सहज आत्म-स्वरूपरूप आपनी सर्वोत्तम अचिंत्य परमात्मदशा क्यां ? अने मायाना आवरणे दिशामूढ थयेल सहज ऐश्वर्यथी वंचित मारी अधमाधम बहिरात्म दशा क्यां ? दीन अने अनाथ उपर दया करनार हे प्रभु,

शुद्ध भाव मुजमां नथी, नथी सर्व तुज रूप;
नथी लघुता के दीनता, शुं कहुं परम स्वरूप? २

हवे मने एक आपनो ज आश्रय छे. हे कारुण्यमूर्ति, मारामां अनंत दोष छे. पण आप निर्दोष प्रभुनुं शरण, उपासना, भक्ति ए ज मारे निर्दोष थवा माटे सर्वोत्तम अनन्य अवलंबन, आधार छे. १

२. सर्व दोषनुं मूळ तो अज्ञान, मारा स्वरूपनुं अभान ते छे. तेनो जे उपाय आत्मज्ञान के शुद्ध सम्यग्दर्शन ते शुद्ध भाव विना प्रगटे नहि. परंतु निरंतर शुभ अशुभमां ज निमग्न एवा मने शुद्ध भावनी प्राप्ति थती नथी. तेम शुभाशुभ भावने तजी ऐक शुद्ध भावमां ज निरंतर रमणता करवा योग्य छे एवो लक्ष, एवो पुरुषार्थ, एवो उपयोग रहेतो नथी. ते शुद्ध भावनो प्राप्ति माटे तत्त्वदृष्टि साध्य थवी जोईए.

" चित्तनी शुद्धि करी, चैतन्यनुं अवलोकन—धर्मध्यान करवुं. आत्मसाधननी श्रेणीए चडवुं. अनादिकाळना दृष्टिक्रमनुं भूलवुं, ने स्थिरता करवी. "—श्रीमद् लघुराज स्वामी उपदेशामृत.

समस्त सचराचर आ जगत आपना ज्ञानमां प्रत्यक्ष भासी रह्युं छे तेथी ज्ञान अपेक्षाए आप लोकालोक व्यापक छो. तेथी ज्यां जोउं त्यां सर्वमां तुंहि तुंहि, ज्ञानस्वरूप एक आपने ज, शुद्ध आत्माने ज, जोवानी दृष्टि साध्य थवी जोईए ते थतो नथी. तेथी ज्ञाता दृष्टा एवो जे पोतानो शुद्ध आत्मा तेना उपर भाव, उपयोग स्थिर थतो नथी, अने ते स्थिरता विना शुद्ध भाव के स्वात्मानुभूति केम प्रगटे? सर्वमां तुंज

नथी आज्ञा गुरुदेवनी अचळ करी उर मांहि;
आपतणो विश्वास दृढ, ने परमादर नांहि. ३

छो, एम भासे, तो सर्वत्र तुंहि तुंहि एक अभंग रटना जागे अने पिउ पिउ पोकारवारूप आह्री वेदना उद्भवे त्यां सर्वमां दासत्व भाव मनाय अने लघुता, दीनता, विनय गुण आवे. एवी लघुता के दीनता मारामां आवी नथी, तेथी हे सहजात्मस्वरूप परमात्मा, मारी अपात्रतानुं हुं शुं वर्णन करुं ? २

३. आपनी अर्थात् परमात्मपदनी अभेद उपासनाथी जेना अंतरमां स्वानुभव प्रकाश जळहळी रह्यो छे एवा प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी, आत्मारामी सद्गुरुदेव कोई महाभाग्य योगे जो मल्या अने तेनी पतितपावना, भवभयहारिणी, शिवसुखकारिणी, अघमोद्धारणी, एवी अपार माहात्म्यवाळी आज्ञा प्राप्त थई, तो तेनुं तथारूप माहात्म्य मने लक्षगत थयुं ज नहि, अने तेथी ते आज्ञा मारा हृदयमां में अचळपणे धारण करी नहि, आराधी नहि, सफळ करी नहि, अने मळी न मळ्या तुल्य करी. तेथी आपनी, सत्स्वरूप परमात्मपदनी सत् श्रद्धा थई नहि. जे 'श्रद्धा परम दुल्लहा' कही छे ते पण ज्ञानी गुरुना योगे सुलभ थवा योग्य छतां प्रमादयोगे में तेवी दुर्लभ श्रद्धा दृढ करी नहि, तेम आपना शरणमां ज मारुं सर्व श्रेय छे एवो विश्वास निश्चळपणे आव्यो नहि. तेथी आपना प्रत्ये परमादर, परम प्रेम, भाव, भक्ति प्रगटयां नहि. ३

शुद्ध भाव मुजमां नथी, नथी सर्व तुज रूप;
नथी लघुता के दीनता, शुं कहुं परम स्वरूप? २

शुद्ध मन एक आपनो ज [illegible] छे. हे [illegible], आपमां [illegible] छे. पण आप [illegible] आत्मा, [illegible] [illegible] माटे [illegible], [illegible] छे. १

२. [illegible] अज्ञान, [illegible] तेनो जे [illegible] आत्मज्ञान के शुद्ध सम्यग्दर्शन ते शुद्ध भाव [illegible] प्रगटे नहि. परंतु निरंतर शुभ अशुभमां ज निमग्न रहेता मने शुद्ध भावनी प्राप्ति थती नथी. तेम शुभाशुभ भावने तजी एक शुद्ध भावमां ज निरंतर रमणता करवा [illegible], [illegible], एवो उपयोग रहेतो नथी. ते शुद्ध भावनी प्राप्ति माटे [illegible] थवी जोईए.

"चित्तनी शुद्धि करी, चैतन्यनुं अवलोकन—अनुसंधान करवुं. आत्मसाधननी श्रेणीए चढवुं. अनादिकाळना दृष्टिभ्रमनुं भूलवुं, ने स्थिरता करवी."—श्रीमद् लघुराज स्वामी उपदेशामृत.

समस्त सचराचर आ जगत आपना ज्ञानमां प्रत्यक्ष भासी रह्युं छे तेथी ज्ञान अपेक्षाए आप लोकालोक व्यापक छो. तेथी ज्यां जोउं त्यां सर्वमां तुंहि तुंहि, ज्ञानस्वरूप एक आपने ज, शुद्ध आत्माने ज, जोवानी दृष्टि साध्य थवी जोईए ते थती नथी. तेथी ज्ञाता द्रष्टा एवो जे पोतानो शुद्ध आत्मा तेना उपर भाव, उपयोग स्थिर थतो नथी, अने ते स्थिरता विना शुद्ध भाव के स्वात्मानुभूति केम प्रगटे? सर्वमां तुंज

नथी आज्ञा गुरुदेवनी अचळ करी उर मांहि;
आपतणो विश्वास दृढ, ने परमादर नांहि. ३

छो, एम भासे, तो सर्वत्र तुंहि तुंहि एक अभंग रटना जागे अने पियु पियु पोकारवारूप आशी वेदना उद्‌भवे त्यां सर्वमां दासत्व भाव मनाय अने लघुता, दीनता, विनय गुण आवे. एवी लघुता के दीनता मारामां आवी नथी, तेथी हे सहजात्मस्वरूप परमात्मा, मारी अपात्रतानुं हुं शुं वर्णन करुं? २

३. आपनी अर्थात् परमात्मपदनी अभेद उपासनाथी जेना अंतरमां स्वानुभव प्रकाश जळहळी रह्यो छे एवा प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी, आत्मारामी सद्‌गुरुदेव कोई महाभाग्य योगे जो मळ्या अने तेनी पतितपावना, भवभयहारिणी, शिवसुखकारिणी, अधमोद्धारणी, एवी अपार माहात्म्यवाळी आज्ञा प्राप्त थई, तो तेनुं तथारूप माहात्म्य मने लक्षगत थयुं ज नहि, अने तेथी ते आज्ञा मारा हृदयमां में अचळपणे धारण करी नहि, आराधी नहि, सफळ करी नहि, अने मळी न मळ्या तुल्य करी. तेथी आपनी, सत्स्वरूप परमात्मपदनी सत् श्रद्धा थई नहि. जे 'श्रद्धा परम दुल्लहा' कही छे ते पण ज्ञानी गुरुना योगे सुलभ थवा योग्य छतां प्रमादयोगे में तेवी दुर्लभ श्रद्धा दृढ करी नहि, तेम आपना शरणमां ज मारुं सर्व श्रेय छे एवो विश्वास निश्चळपणे आव्यो नहि. तेथी आपना प्रत्ये परमादर, परम प्रेम, भाव, भक्ति प्रगटयां नहि. ३

शुद्ध भाव मुजमां
नथी लघुता के दं

हवे मने एक आपनो ज आ
दोष छे. पण आप निर्दोष
निर्दोष थवा माटे सर्वोत्तम अ

२. सर्व दोषनुं मूळ तो
तेनो जे उपाय आत्मज्ञान के
प्रगटे नहि. परंतु निरंतर शुभ
भावनी प्राप्ति थती नथी. तेम
भावमां ज निरंतर रमणता करवा
एवो उपयोग रहेतो नथी. ते शुद्ध
थवी जोईए.

"चित्तनी शुद्धि करी, चैतन्य
आत्मसाधननी श्रेणीए चडवुं. अना
स्थिरता करवी."—श्रीमद् लघुराज

समस्त सचराचर आ जगत आ
छे तेथी ज्ञान अपेक्षाए आप लोकालो
त्यां सर्वमां तुंहि तुंहि, ज्ञानस्वरूप एक
जोवानी दृष्टि साध्य थवी जोईए ते थ
जे पोतानो शुद्ध आत्मा तेना उपर भाव,
ते स्थिरता विना शुद्ध भाव के स्वात्मानु

'हुं पामर शुं करी शकुं?', एवो नथी विवेक;
चरण शरण धीरज नथी, मरण सुधीनी छेक. ५

स्वभाव तजी दई अंतरात्मपणे परमात्मस्वरूपनी भावनामां, चिंतवनमां चित्तनी एकाग्रतारूप परिणति, ते आत्म अर्पणता, ते मारामां आवी नथी. अथवा बाह्यभावे मारुं मनातुं सर्वस्व आपना चरणमां अर्पण करी, आत्मश्रेय माटे एक आप ज मारे परम शरणरूप छो, एवी केवळ अर्पणता, सद्गुरु प्रत्ये शरणभाव, मारामां आव्यो नथी, तेथी सद्गुरुनो अनन्य आश्रय प्राप्त थयो नहि अथवा आश्रयनो योग मळ्यो तो ते सफळ करवा मन-वचन-कायाथी अप्रमत्त पुरुषार्थ वडे तेने आराध्यो नहि.

अथवा अर्थान्तरे आपना परमार्थ स्वरूपने जाण्या विना सामान्यपणुं करी, आपनां चरणोमां हुं वास्तविक आत्मसमर्पण न करी शक्यो, जेथी पूर्वे अनेकवार सुयोग मळ्या छतां पण आपना सत्संग अने सत्सेवाना लाभथी वंचित रह्यो अने तेथी मन-वचन-कायारूप त्रियोग प्रवृत्ति जेथी आपनी अनुगामिनी रही शके एवो, सत्शास्त्रोमांथी (१) प्रयोगवीरोनां जीवनरहस्यरूप धर्मकथानुयोग, (२) कर्मतंत्र रहस्यरूप करणानुयोग, (३) सदाचार विधानरूप चरणानुयोग अने (४) विश्वपदार्थ रहस्यरूप द्रव्यानुयोग ए चारे अनुयोगोनो आश्रयपूर्वक, स्वाध्याय आदि न करी शक्यो अने तेथी तेना परमार्थ रहस्यने न पाम्यो. ४

५. वेडीओथी जकडायेलो केदी, जेम कोई पण क्रिया स्वाधीनपणे करवा समर्थ थतो नथी, तेम कर्मरूप वेडीथी जकडायेलो,

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
अने [illegible]
अने मुक्तदशा [illegible] पामी [illegible]
परमकृपाळुदेवनो आश्रय पण मळ्यो. [illegible] निराश्रित
थयो छुं, ते पण आपना शरणना आश्रयथी [illegible] पामी, परम
पुरुषार्थ योग्य थई, शुक्ल ध्यानमां आरूढ थई, [illegible] अने समाधि
पामी, सर्व कर्मो क्षय करी, सर्व बंधनो टाळी, सिद्धपद पर्यंतनी
सर्वोत्कृष्ट सच्चिदानंदमय सर्वज्ञदशारूप निज निर्मळ शुद्ध सहज आत्म-
स्वरूपने पामवा भाग्यशाळी बनी शकुं एम छुं. आपनुं शरण आवुं
शक्तिशाळी होवाथी, एवी धीरजथी तेने दृढपणे एकनिष्ठपणे धारण
करवुं जोईए, के ते शरणभाव छेक मरण सुधी निश्चळपणे टकी रहे
अने तेथी समाधिमरणनी प्राप्ति थाय. एकवार समाधिमरण थाय तो
तेथी अनंतकाळनां असमाधिमरण टळे. आ दुर्लभ मानवभव तथा
ज्ञानी गुरुनी प्राप्तिरूप मुक्ति माटेनां सर्वश्रेष्ठ कारणो मळ्यानी सफळता
त्यारे ज गणाय, के जो अनंतकाळे समाधि बोधिनी प्राप्ति थाय, तेवी
उत्कृष्ट आराधनापूर्वक समाधिमरण साधी शकाय. ते माटे आपनुं
शरण हुं अंत सुधी अचळपणे ग्रही राखुं, एवी धीरज मारामां नथी,
ते प्राप्त थाओ. ५

अचिंत्य तुज माहात्म्यनो, नथी प्रफुल्लित भाव;
अंश न एके स्नेहनो, न मळे परम प्रभाव. ६

---

६. उपर जणाव्या प्रमाणे स्वपरना श्रेयनी सफळता साधवा अर्थे हे प्रभु, आपनुं माहात्म्य, आपनुं सामर्थ्य, आपनी शक्ति कोई अचिंत्य अलौकिक, अद्भुत छे.

इन्द्र, चक्रवर्ती आदि त्रण लोकने जीतवा समर्थ, एवा तो मळवा घणा सुलभ छे, पण इन्द्रियो अने मनने जीते तेवा मळवा अत्यंत दुर्लभ छे. आपे ते इन्द्रियविजय अने मनोजयथी त्रण लोकने वश करवा करतां पण विकट कार्य करीने, अधिक पराक्रम दर्शाव्युं छे. अने तेथी समस्त जगतमां जेनी आण वर्ते छे, एवा एवा मोहादि शत्रुओनो, आपे पराजय करी, मोक्षलक्ष्मीने प्राप्त करी छे, ते आपनुं अचिंत्य अद्भुत पराक्रम त्रण लोकमां वंदनीय छे. तेथी आपनुं माहात्म्य, आपनी आत्मप्रभुता, कोई अचिंत्य, अनुपम, अलौकिक, सर्वोत्कृष्टपणे शोभी रही छे. ते सर्वोत्तम दशा विचारतां, ते उपर अत्यंत उल्लासभाव आववो जोईए, प्रफुल्लितता थवी जवी जोईए, आनंदनी ऊर्मिओ ऊछळवी जोईए. अने एकतार स्नेह उभरावो जोईए. तेम थतुं नथी. तेवो उल्लासभाव, प्रेमभाव के प्रभाव मारामां जागतो नथी. नहि तो आपनुं अपार सामर्थ्य चिंतवतां मारामां पण एवुं ज सामर्थ्य रहेलुं छे ते जागृत थाय, प्रगट थाय, पुरुषार्थबळ वधे अने अज्ञान, रागद्वेष आदि अंतरंग शत्रुओ जीतवा परम प्रभाव सर्वोत्कृष्ट शक्तिसामर्थ्य प्रगटे अने प्रांते,

अचळ रूप आसक्ति नहि, नहि विरहनो ताप;
कथा अलभ तुज प्रेमनी, नहि तेनो परिताप. ७

'प्रगट तत्त्वता ध्यावतां, निज तत्त्वनो ध्याता थाय रे,
तत्त्व रमण एकाग्रता पूरण तत्त्वे एह रूमाय रे.'
—श्रीमद् देवचंद्रजी

एम प्रगट सहजात्मस्वरूपना अचिंत्य माहात्म्यने ध्यावतां ध्याता पण तेज अचिंत्य दशारूप निज सहजात्मस्वरूपने पामी कृतार्थ थई जाय. ६

७. संसारी जीवोनी सर्व अवस्था अचळ नथी, सदा टकी रहेनार नथी, पण क्षणमां विणसी जाय तेवी दुःखद छे. ज्यारे आपनुं परमात्मपद अचळित त्रिकाळ ए ज स्वरूपे टकीने रहे तेवुं शाश्वत स्वरूप छे. तेथी तेवा शाश्वत स्वरूपमां जो मने आसक्ति, प्रेम, स्नेह प्रगटे, तो मारुं शाश्वत स्वरूप ओळखाय अने तेथी परम सुखमय शाश्वत अवस्थामय सिद्धपदनी प्राप्ति थाय, जेथी संसारनां सर्व क्षणिक अवस्थाजन्य परिभ्रमणना दुःखनो अंत आवे. परंतु मोहनुं प्राबल्य एवुं छे के ते तन धन स्वजनादि परमां मारापणानी मान्यताथी तेमां ज आसक्ति प्रीति बनी रही छे. अने तेथी आपना शाश्वत सुखमय अचळ स्वरूपमां प्रीति, प्रेम, लगनी लागती नथी. तेम आपनो विरह रह्या करे छे, तेथी अनंत संसारना त्रिविध तापाग्निना अंगारामां निशदिन बळ्या करवुं पडे छे, एवो खेद के दुःख लागतुं नथी. जो आपनो विरह अत्यंत साले तो प्रभुपद प्रत्ये प्रेमभाव वधी जतां संसारनी आसक्ति

भक्तिमार्ग प्रवेश नहि, नहि भजन दृढ भान;
समज नहीं निजधर्मनी, नहि शुभ देशे स्थान. ८

दूर थई जाय अने साक्षात् प्रभुपदनी प्राप्ति थाय; केमके अतिशय विरहाग्नि हरि प्रत्येनी जलवाथी साक्षात् तेनी प्राप्ति थाय छे. तेमज संतना विरहानुभवनुं फळ पण ते ज छे.' अने तो तो ते विरह पण सुखदायक थई पडे. पण तेवो विरहाग्निनो ताप लागतो नथी.

तेम आपना प्रत्ये प्रेम, प्रीति, भक्तिथी जे जे महापुरुषो आपना पदने पामवा भाग्यशाळी बनी कृतार्थ थई गया तेवा सत्पुरुषोनां चरित्रो के तेमनी प्रेमभक्तिनुं कथनकीर्तन, तेनुं श्रवण प्राप्त थवुं दुर्लभ थई पडयुं छे. तेमज पूर्वे छद्मस्थ अवस्थामां समस्त जगतना जीवोने निष्कारण करुणाथी तारवानी, उद्धारवानी, आपनी उत्कृष्ट परमार्थ कारुण्य भावना, ते आपनो विश्वव्यापक प्रेम, विश्वबंधुत्व ए आदि आपना, सर्वोत्तम चरित्रनी कथा--कीर्तन सांभळवानां मळवां असुलभ थई पडयां छे, तेनो पण अत्यंत ताप, खेद रहेतो नथी. ७.

८. ज्ञानमार्ग, क्रियामार्ग अने भक्तिमार्ग ए त्रणेय मार्गमां, भक्तिमार्ग सर्वने माटे सुगम राजमार्ग कह्यो छे.

"ज्ञानमार्ग दुराराध्य छे, परमावगाढ दशा पाम्या पहेलां ते मार्गे पडवानां घणां स्थानक छे. संदेह, विकल्प, स्वच्छंदता, अतिपरिणामीपणुं ए आदि कारणो वारंवार जीवने ते मार्गे पडवाना हेतुओ थाय छे; अथवा ऊर्ध्वभूमिका प्राप्त थवा देतां नथी.

क्रिया मार्गे असद् अभिमान, व्यवहारआग्रह सिद्धिमोह, पूजा-

तुज वियोग स्फुरतो नथी, वचन नयन यम नांहि;
नहि उदास अनभक्तथी, तेम गृहादिक मांहि. ११

११. हे प्रभु, आपनो योग निरंतर रह्या करे अने चित्तवृत्ति आपना स्वरूपनी अभेद चिंतवनामां एकाग्रपणे निमग्न रहे, तो तो आत्मदशा, आत्मरमणतारूप सत्सेवानी प्राप्ति थाय. पण तेम थतुं नथी अने आपनो वियोग रह्या करे छे ए दुःख क्षणे क्षणे स्फुरवुं जोईए, याद आववुं जोईए, तेम थतुं नथी अर्थात् आपनो वियोग सालतो नथी. तेनुं कारण, वचन अने नयननो संयम नथी, ते छे. बाह्य पदार्थोमां ज आकर्षण होवाथी त्यां ज जोडाईने ते महा अनर्थकारी बने छे.

जगतमां धननुं माहात्म्य जीवे जाण्युं छे, तेथी तेने ज्यां त्यां निरर्थक नाखी देतो नथी, दुर्व्यय करतो नथी, तेम पोतानुं अहित थाय तेवा कार्यमां वापरतो नथी. पांच इन्द्रिय अने मन ते ऐहिक धन करतां केटलां बधां अधिक मूल्यवान छे! केटलां पुण्य वध्यां त्यारे संज्ञी पंचेन्द्रियपणुं अने तेमां मोक्षप्राप्ति माटे सर्वोत्तम एवो मानवभव मळ्यो छे? ए समजाय तो वचन नयन आदि इन्द्रियो, भव वधी जाय एवां, कर्मबंधन थाय तेवां कार्योमां तो न ज वपराय, तेनो दुरुपयोग न थाय, एम खचीत प्रवर्ताय. परंतु साची समजण के विचारना अभावे, पांचेय इन्द्रियो निरंकुशपणे छूटी मूकी छे, अने तेथी अहोरात्र पोताने ज दुःखरूप एवा पापमां प्रवर्ती रही छे. तेमां पण वचन अने नयनथी तो घणां ज कर्मो बंधाया करे छे. वचनथी वेर, विरोध के प्रेमप्रीतिरूप द्वेष के राग

वध्या ज करे अने भववृद्धि थया ज करे तेवां कर्म बंधाय छे. नयनथी पण इष्टानिष्ट भावनी वृद्धि थई रागद्वेष वध्या ज करे छे, तेनो लक्ष आवतो ज नथी. निरर्थक ज्यां–त्यां जोवानी ज आतुरता, अभ्यास अने ज्यां-त्यां जेम तेम बोल्या ज करवानी कुटेवथी केवां केवां कर्मबंधन थई रह्यां छे अने पोताने केवी हानि थई रही छे तेनो विचार सरखोय आवतो नथी ! ए ज मोहनुं प्राबल्य छे.

ज्ञानीओए ए पांचेय इन्द्रियो अने मनने वश करीने सर्वोत्तम सुखमय परमात्मदशा प्रगटावी छे. नेत्रोथी आ असार अने स्वप्नवत् जगतने जोवानुं बंध करी, अंतरमां दिव्य विचार अने ज्ञानचक्षु खोली अनंत ऐश्वर्यशाळी, सुखनिधान, अजरामर एवा पोताना आत्मदेवनुं दर्शन कर्युं छे. 'दृश्य अने अदृश्य कर्युं अने अदृश्यने दृश्य कर्युं एवुं ज्ञानी पुरुषोनुं आश्चर्यकारक अनंत ऐश्वर्यवीर्य वाणीथी कही शकावुं योग्य नथी.' धन्य छे ते इन्द्रियो अने मननो जय करनार पराक्रमशाळी ज्ञानी पुरुषोना पुरुषार्थ पराक्रमने !

वळी ते ज्ञानीओए मौनव्रतना अभ्यासथी वाणीनो संयम साध्यो अने परिणामे त्रण जगतने कल्याणकारी पांत्रीश अतिशययुक्त अलौकिक दिव्य वाणीरूप बोधवृष्टिथी जगत जीवोनुं श्रेय करी स्वपरने अनंत उपकार कर्यो !

ए महापुरुषोनां चरित्रोनां अवलंबने, वचनने प्रभुस्तुति, भक्ति, स्वाध्याय आदि स्वात्महितनां कार्यमां जोडाय अने नयननो प्रभुदर्शनमां के श्रुतज्ञाननां पठन–पाठनमां के जीवरक्षा माटे यत्नामां

अहंभावथी रहित नहि, स्वधर्म संचय नांहि;
नथी निवृत्ति निर्मळपणे, अन्य धर्मनी कांई. १२

सदुपयोग थाय, बन्नेनो संयम थाय तेम थतुं नथी.

वळी जे जीवो आपना भक्त नथी अने आरंभ परिग्रहादि संसार-प्रपंचोमां आसक्त छे तेओनो संग प्रसंग पण हजु मने गमे छे. पण तेमना प्रत्ये उदासीनता, उपेक्षाभाव आवतो नथी, तेमज आ कुटुंब परिवार आदि सर्व परमार्थथी मारां नथी पण मारा आत्माने बंधनरूप ए बधी मायाजाळ छे, फांसी छे, माटे तेमां ममता, मोह करी तल्लीन थई जवाय छे ए भूल छे, एम भान रहेतुं नथी अने तेथी तेमां पण वैराग्य के उदासीनता आवती नथी. तेथी आत्मस्वरूपमां के प्रभु-भक्तिमां रुचि, प्रीति, तल्लीनता जागती नथी. ११

१२. हे प्रभु ! मारामांथी अहंभाव हजु जतो नथी अने तेथी स्वभावरूप स्वधर्मनो संचय अने परभावरूप अन्य धर्मनी निवृत्ति निर्मळपणे क्षायकभावे अथवा आसक्तिरहितपणे थवी जोईए ते थती नथी.

ज्ञानी कृपाळु सद्गुरु कहे छे के, "हुं देहादि स्वरूप नथी. अने देह स्त्री पुत्रादि कोई पण मारां नथी; शुद्ध चैतन्यस्वरूप अविनाशी एवो हुं आत्मा छुं." आम छतां मन वचन काया इत्यादिक जे हुं नथी, तेम जे मारां नथी पण परपुद्गलरूप ए सर्व माराथी केवळ न्यारां छे, तेमां अनादि अविद्यावशे हुंपणुं अने मारापणुं अहंभाव ममत्वभाव थया ज करे छे. श्रीमद् यशोविजयजी कहे छे :

अहंममेति मंत्रोऽयं मोहस्य जगदान्ध्यकृत् ।
अयमेव हि नञ्पूर्वः प्रतिमंत्रोऽपि मोहजित् ॥

अर्थात् हुं अने मारुं ए मोहनो एवो प्रबळ मंत्र छे के जेनाथी आखुं जगत् आंधळुं बन्युं छे अने वास्तविक एवुं पोतानुं मूळ स्वरूप भूली परमां हुं अने मारुं करी मायाजाळमां फसाई दुःखी दुःखी थई रह्युं छे.

ते मोहना मंत्रने निष्फळ करवा तेनी सामे प्रतिमंत्र पण छे. ते कयो ? तेनो उत्तर: ज्यां ज्यां हुं अने मारुं मनायुं छे त्यां त्यां तेनी पूर्वे 'न' योजवामां आवे तो ते मोहने जीतनार प्रबळ महामंत्ररूप बने छे अर्थात् परमां हुं अने मारुं छे तेमां हुं नहि, मारुं नहि एम समजाय, मनाय अने प्रवर्ताय तो मोहनो संपूर्ण पराजय थाय तेम छे.

परमकृपाळु सद्गुरुदेव कहे छे: "अनादि स्वप्नदशाने लीधे उत्पन्न थयेलो एवो जीवनो अहंभाव, ममत्वभाव, ते निवृत्त थवाने अर्थे ज्ञानी पुरुषो ए देशना प्रकाशी छे. ते स्वप्नदशाथी रहित मात्र पोतानुं स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे, तो सहज मात्रमां ते जागृत थई सम्यग्दर्शनने प्राप्त थाय; सम्यग्दर्शनने प्राप्त थई स्वस्वभावरूप मोक्षने पामे."

"...अज्ञानदशारूप स्वप्नरूप योगे आ जीव पोताने, पोतानां नहि एवां बीजां द्रव्यने विषे स्वपणे माने छे; अने ए ज मान्यता ते संसार छे, ते ज अज्ञान छे, नरकादि गतिनो हेतु ते ज छे, ते ज जन्म छे, मरण छे अने ते ज देह छे, देहना विकार छे, ते ज पुत्र, ते ज पिता, ते ज शत्रु, ते ज मित्रादिभाव कल्पनाना हेतु छे अने तेनी

एम अनंत प्रकारथी, साधन रहित हुंय;
नहीं एक सद्गुण पण, मुख बतावुं शुंय? १३

कसोटीरूप बनी साक्षात् अनुभवप्राप्तिनुं कारण थाय, तेवो पुरुषार्थ पण थतो नथी तो आपना आश्रये तेवो सत्पुरुषार्थ निरंतर प्राप्त रहो! एज प्रार्थना छे. १२

१३. आ प्रमाणे अनंत प्रकारे जोतां मारी पासे एक पण साधन छे नहि के जेथी मारा अनंत दोष टळी जाय अने मने मारा संपूर्ण निर्दोष, सत्परमात्मपदनी प्राप्ति थाय. उपर जे जे साधनो दर्शाव्यां छे तेमांनां प्रत्येक साधन एटलां बधां बळवान अने समर्थ छे के यथार्थ रीते तेमांनुं एक पण आराधाय तो अवश्य सर्व दोषने टाळी सर्व आत्मिक सद्गुणो प्रगटावी स्वरूपसिद्धिने आपे. परंतु ते साधनोनुं यथार्थ माहात्म्य के सामर्थ्य में जराय लक्षमां के विचारमां लीधुं ज नथी तो तेना सम्यक् आराधननी तो वात ज शी? तेथी मारामां एक पण सद्गुण प्रगट्यो नथी.

ज्यां सुधी सर्व दोषनुं मूळ एवुं अज्ञान टळ्युं नथी अर्थात् मारा स्वरूपनुं भान थयुं नथी, ओळखाण थई नथी, श्रद्धा, निश्चय थयो नथी, अनुभव थयो नथी, त्यां सुधी जे जे गुणो मारामां लौकिकभावे जणाय छे ते सद्गुणो कहेवावा योग्य नथी. जेम क्षीरभोजनथी भरेला भाजनमां अल्पमात्र विष पड्युं होय तो ते भोजनने योग्य रहेतुं नथी, तेम लौकिकपणे दया, शांति, समता, क्षमा, जप, तप, संयम, सदाचार, वैराग्य, न्याय, नीति, प्रमाणिकता, बुद्धि इत्यादि गुणोमांथी

केवळ करुणा-मूर्ति छो, दीनबंधु दीननाथ;
पापी परम अनाथ छुं, ग्रहो प्रभुजी हाथ. १४

कचित् कोई वार कोई गुणो प्राप्त थया देखाता होय तोपण मूळ पोताना स्वरूपनी ओळखाणरूप सम्यग्दर्शन वगर ते सर्व गुणो सद्-गुणपणाने पामता नथी, पथ्थरनी उपमा पामे छे अने भाररूप गणाय छे; परंतु ते ज गुणो जो सम्यग्दर्शन सहित होय तो सद्गुणो गणाय छे अने अमूल्य रत्नरूप शोभाने धारण करे छे. तेथी उपरोक्त साध-नोनी उपासनाथी जो देहादिमां आत्मपणानी मान्यतारूप मिथ्यादर्शन टळी जई पोताना स्वरूपनी ओळखाण, अनुभव, रमणतारूप स्वधर्मनी प्रगटता थाय तो ते ज बधा सद्गुणो अवश्य सद्गुणरूप लेखाय, अने अप्राप्त एवा बधा सद्गुणो प्रगट थई स्वरूपसिद्धि पमाय.

परंतु हे प्रभु ! ते विनानो, एक पण साधन के सद्गुण विनानो हुं, सर्वस्व हारी गयेलो, आवी दीन अवस्थाने पामेलो आपने मुख बतावबाने पण योग्य रह्यो नथी. १३.

१४. एम एक पण साधन के सद्गुण विनानो हुं, सर्व सद्गुण-संपन्न एवा आपनी पासे आववानी हिंमत करी शकतो नथी. हुं पापी छुं, परम अनाथ छुं. केवळज्ञानस्वरूप मारा आत्मानी मने श्रद्धा, प्रतीति, ओळखाण नथी ए मिथ्यात्व के अज्ञान जेवुं बीजुं कोई पाप नथी; कारण तेथी मारा आत्माना गुणोनो हुं घात करी रह्यो छुं; अने 'आत्मघाती महापापी' छे. तेथी हुं महापापी छुं. तेम आपना सिवाय आ

पापमांथी मारो उद्धार करे, मने बचावे तेवुं कोई शरण बीजुं मने नथी, तेथी हुं अनाथ छुं.

परंतु आप तो साक्षात् करुणामूर्ति छो. दीनना बंधु छो. अनाथना नाथ छो. अशरणना शरणरूप छो. तेथी ते विचारे आपना शरण विना मारे बीजा कोईनो आधार नथी. संसारमां तन, मन, वचन, स्त्री, पुत्र, गृह, कुटुंब, धन, स्वजन आदि जे जे हुं सुखनां कारण गणी मारां मारां मानुं छुं, दुःखमां सहायक थशे एम मानुं छुं, तेमांनां कोई मने संसारना त्रिविध तापाग्निनी झाळथी बचावी शांतिनुं कारण बने एम नथी; तेम दुःखमां, रोगमां के मरणकाळनी असह्य वेदनाना वखतमां, तेथी बचावे के शरणरूप थाय, के समाधिमरणमां सहायक थई परलोकमां सद्गति अने सत्सुख प्राप्त कराववामां साधन बने, एम कोई नथी ज. तेथी ते सर्व अन्य आलंबन तजी, हवे सर्व अभिमानने, आपनां चरणनुं शरण स्वीकारुं छुं. तो कृपा करी हे प्रभुजी, मारो अनाथनो हाथ ग्रहो, अने मने आपनी आज्ञा, बोध, भक्ति आदि सर्वोत्तम साधनो द्वारा तारो, उद्धारो. सर्व संसारी आत्माओने, केवळ परमार्थने नामे रागद्वेष, अज्ञान आदि दोष युक्त एवा देवगुरुओ, ते सर्वनी आस्था तजी, एक आप सर्वज्ञ वीतराग प्रभुनुं ज शरण अनन्यभावे हवे हुं अंगीकार करुं छुं. तेथी निष्काम करुणासागर हे प्रभु, आप मारो आ संसार दुःखदरियाथी उद्धार करो. १

अनंत काळथी आथड्यो, विना भान भगवान;
सेव्या नहीं गुरु संतने, मूक्युं नहीं अभिमान. १५
संतचरण आश्रय विना, साधन कर्यां अनेक;
पार न तेथी पामियो, ऊग्यो न अंश विवेक. १६

---

१५. हे भगवान, मारा स्वरूपना भान विना, आ अपार संसारमां हुं जन्म, जरा, व्याधि, मरण इत्यादि दुःख, दुःख ने दुःख ज भोगवतो चोरासी लाख योनिमां चारे गतिमां अनंत काळथी अनंतथी अनंतवार परिभ्रमण कर्या ज करुं छुं, आथड्या ज करुं छुं, तेमां कोई काळे में आत्मारामी, आत्मज्ञानी एवा संतने, सद्गुरु तरीके स्वीकारी आराध्या नथी, तेमनी सेवा करी नथी. तेमनी आज्ञा उपासी नथी, कारण के अभिमानथी अक्कड थई ज्यां त्यां आथडतो एवो हुं ज्ञानीना शरणमां जवारूप लघुता, नम्रता, विनयगुण पाम्यो नथी. १५

१६. "अनादि काळना परिभ्रमणमां अनंतवार शास्त्रश्रवण, अनंतवार विद्याभ्यास, अनंतवार जिनदीक्षा, अनंतवार आचार्यपणुं प्राप्त कर्युं छे. मात्र 'सत्' मळ्या नथी, 'सत्' सुण्युं नथी अने 'सत्' श्रध्युं नथी, अने ए मळ्ये, ए सुण्ये, ए श्रध्ये ज छूटवानी वार्तानो आत्मार्थी भणकार थशे.

मोक्षनो मार्ग बहार नथी, पण आत्मामां छे. मार्गने पामेलो मार्ग पमाडशे."—श्रीमद् राजचंद्र.

एम, सत्‌रूप परमात्मानो जेणे अंतरमां साक्षात्कार कर्यो छे, एवा आत्मारामी, आत्मज्ञानी, मोक्षमार्गना नेता संतने सद्गुरुपणे

सहु साधन बंधन थयां, रह्यो न कोई उपाय;
सत्साधन समज्यो नहीं, त्यां बंधन शुं जाय? १७

निर्धारी, तेना चरणमां सर्वार्पणभावे शरणता स्वीकारी, तेनो आश्रय आ जीवे ग्रहण कर्यो नथी, ते सिवाय बीजां अनेक साधनो करी चूक्यो छे. पण तेथी आ विषम अने भयंकर एवा संसार दुःखदरियानो पार आव्यो नथी. ऊलटां ते साधनो परिभ्रमणवृद्धिनां कारण बन्यां छे.

बीजां साधन बहु कर्यां, करी कल्पना आप;
अथवा असद्गुरु थकी, ऊलटो वध्यो उताप.

— श्रीमद् राजचंद्र

कारणं के साचा मार्गदर्शकना शरण विना, तेनी आज्ञा विना, तेना बोधरूप सांक्षात् ज्ञानविना, उज्ज्वळ प्रकाश विना, स्वपरना भेदरूप, जडचेतनना भेदज्ञानरूप, पोताना स्वरूपनी समजण, श्रद्धा, रमणतारूप, स्वभावनुं ग्रहण ए ज साररूप उपादेय छे अने परभावनुं ग्रहण ए दुःखरूप असार होवाथी हेय छे, इत्यादि प्रकारे सार-असारनो, हित-अहितनो, कर्तव्य-अकर्तव्यनो, ग्राह्य-त्याज्यनो विवेक, समजण, भान, तेनो अंश पण प्रगट्यो नहि. अने तेथी अंतरनुं अज्ञानतिमिर तेनो अंश पण टळ्यो नहि, जेथी संसारभ्रमणनो अंत आव्यो नहि. १६

१७. पूर्वे जे जे साधन आ जीवे कर्यां छे ते सौ बंधन माटे ज थयां छे. पण अबंधदशा प्रगटाववा कोई समर्थ बन्यां नथी. हवे मारी समज प्रमाणे एवो करवा योग्य कोई उपाय बाकी रह्यो नथी. बधां साधनोमां सत् साधन शुं छे? ते गुरुगमे समजायुं नथी, अने ते विना बंधन केम करीने जाय?

मानपोन निरोध स्ववोध कियो,
हठजोग प्रयोग सु तार भयो,
जप भेद जपे तप त्यौंहि तपे,
उरसें हि उदासि लही सवपें. २

सब शास्त्रन के नय धारि हिये,
मतखंडन खंडन भेद लिये,
वह साधन वार अनंत कियो,
तदपि कछु हाथ हजु न पर्यो. ३

---

२. मनने रोकी, श्वासोच्छ्वासने स्थिर करी, पोताना स्वरूपनो बोध थवा, आत्मज्ञान प्राप्त थवा प्रयास कर्यो छे. प्राणायाम आदि अष्टांग योगनी साधना वडे मन वचन कायानो प्रवृत्तिने वश करवा, हठयोगना प्रयोगोमां तल्लीनता करी अनेक कष्टकारी साधनाओ करी छे. अनेक प्रकारना जपनो जाप कर्यो छे तेमज अनेक प्रकारनी उग्र तपश्चर्याओ पण करी छे अने जगतमां सर्व प्रत्ये उदासीनता, वैराग्य, अणगमो धारण कर्यो छे. २

३. स्वदर्शन अने परदर्शननां सर्व शास्त्रोनो अभ्यास करी, सर्व शास्त्रोना नयने एटले दार्शनिक मत, सिद्धांतने हृदयमां धारण करी, पोताना मतने मंडन करवा, स्थापवा अने अन्य मतोने खंडन करवाना भेदने, प्रकारने, प्रपंचने, रहस्यने जाणी तेनी ज प्रवृत्तिमां तत्पर रही आत्मार्थ साधनारूप स्वकार्य करवुं रही गयुं छे अथवा तेथी ज आत्मप्राप्ति थशे एम मानी भूल करी छे. आम साधना करवामां के कष्ट वेठवामां बाकी राखी नथी.

तनसें, मनसें, धनसें, सबसें,
गुरुदेवकी आन स्वआतम बसें;
तब कारज सिद्ध बने अपनो,
रस अमृत पावहि प्रेम घनो. ६

---

६. आ एटले **समंतात्**, चारे तरफथी, समस्त प्रकारे; अने ज्ञा एटले **ज्ञापयति पदार्थान्**, पदार्थोने जणावे ते 'आज्ञा.' अथवा आ एटले मर्यादा, वस्तुनी जेवी मर्यादा स्वद्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावरूप छे तेम जाणवुं जेथी थाय ते आज्ञा.

आ विश्वमां जड—चैतन्यात्मक जे जे पदार्थो छे ते सर्वनुं सर्व-प्रकारे यथातथ्य ज्ञान जेथी थाय ते आज्ञा. तेथी जडनुं जडस्वरूपे अने चेतननुं चेतनस्वरूपे यथार्थपणे ज्ञान थाय. तेथी परम कृतार्थ प्रगट ज्ञानमूर्ति एवुं सद्गुरुनुं शुद्ध सहज आत्मस्वरूप अने पोतानुं पण मूळ तेवुं सद्गुरुनुं शुद्ध चैतन्यघन सहज आत्मस्वरूप छे, तथा ते ज एक परम प्रेमे उपासवायोग्य यावत् प्राप्त करवा योग्य परम पदार्थ छे एम समजाय. परिणामे यावत् मोक्षपद प्राप्त थाय.

आवुं अपार माहात्म्य ज्ञानी गुरुनी 'आज्ञा' उपासवामां रह्युं छे-ज्ञानीनी गमे तेवी आज्ञा एक ए ज परमार्थने प्रतिबोधवा अनुलक्षित होय छे के अनादिथी अप्राप्त एवुं निज निर्मळ चिदानंदघन सहज आत्मस्वरूप ते भजवुं अने अन्य सर्व परद्रव्य परभावरूप मायाना आवरणने तजवुं; जेथी जीव परमात्मपदरूप अनंत सुखमां विराजित थई परम कृतार्थ थाय.

वह सत्य सुधा दरशावहिंगे;
चतुरांगुल हे दृगसें मिलहे;
रसदेव निरंजन को पिवही,
गहि जोग जुगोजुग सो जीवही. ७

ज्यारे जीवने ज्ञानी सद्‌गुरुदेवनी आज्ञानुं एवुं अचिंत्य अपार माहात्म्य समजाय त्यारे ज तेने उपासवा ते तत्पर थाय. तन मन धन आदि सर्व समर्पणपणे एक ए ज आज्ञा आराधवामां सतत उद्यमी थाय. ते आज्ञा ज पोताना आत्मामां, अंतरमां वसे, अत्यंत स्थिर थाय, तेना ज आराधनमां निरंतर चित्त एकाग्र थाय त्यारे गुरुदेवनी कृपा-प्रसादीरूप गुरुगमने पात्र थाय. अने त्यारे ज पोतानुं कार्य सिद्ध थाय. अर्थात् उत्कृष्ट प्रेमे, अत्यंत उल्लासित भावभक्तिए ते आज्ञाना अखंड आराधनथी स्वानुभवरूप अमृतरसमां रेलता, स्वानुभव अमृत-रसना अपार सागर समान सद्‌गुरुदेवना अचिंत्य सहजात्मस्वरूपनुं यथार्थ माहात्म्य लक्षगत थतां, ते स्वरूपचिंतनमां ज वृत्तिनी एकाग्रता परम उल्लासभावे ज्यां वृद्धिगत थाय, त्यां परमात्मा अने आत्मानुं एकरूप थई जवुं एवी अभेद स्वात्मचिंतना जागे अने पोताने पण स्वानुभवरूप अमृतरसनो आस्वाद प्राप्त थाय. ६

७. एम सद्‌गुरु प्रत्ये, तेमनी आज्ञा प्रत्ये उत्कृष्ट प्रेम, प्रीति, रुचि, भक्ति, भाव, उल्लासनी वृद्धि, गुरुगमरूपी चावीथी, अनुभव कपाट खोली दई आत्मानंदरूप सत्य सुधा, अमृतरसने बतावी दे छे, प्राप्त करावे छे.

अर्थात् सद्गुरुनी आज्ञामां निरंतर उत्कृष्ट भाव उल्लासथी वृत्ति एकतान थतां, सद्गुरुनुं अंतरंग ऐश्वर्ययुक्त अलौकिक स्वरूप ओळखाय छे. तेथी तेमनी कृपादृष्टियोगे, गुरुगमना प्रतापे अंतर्मुख दृष्टि पमाय छे. अनादिथी मोहांध एवा आ जीवनी बाह्यदृष्टि छे ते टळी जई अंतरंग दृष्टि खूली जाय छे. आत्मा जोवानी दृष्टि प्राप्त थाय छे. विचार अने ज्ञानचक्षुथी ज्यां त्यां सर्वत्र एक परमात्मतत्त्वने जोवानी अपूर्व दृष्टि साध्य थाय छे. दृश्य एवुं जगत् अदृश्य करीने अदृश्य एवुं चैतन्यचिंतामणि परमात्मतत्त्व दृश्य करवारूप अपूर्व पुरुषार्थ पराक्रम प्रगट थाय छे. 'तुंहि तुंहि' एक ए ज प्रेमलगनी वधी जाय छे. तेथी अभेद चिंतनामां निमग्न थतां, उपयोगनी स्थिरताथी अनुभव अमृतरूप सत्यसुधानो आस्वाद प्राप्त थाय छे.

'चतुरांगुल है दृगसें मिलहै,' ए चरणनो यथार्थ परमार्थ तो मात्र अनुभव रसास्वादी ज्ञानीओना हृदयमां ज रह्यो छे जे त्यांथी ज गुरुगमे प्राप्त थवायोग्य छे.

निरंजन एटले कर्मरूप अंजन, मेश, मलिनता, अशुद्धि तेथी रहित, देव एटले स्वरूपानंदमां रमण करता, कर्ममुक्त, शुद्ध सहजात्मा एवा निरंजनदेवनो रस एटले शुद्धात्मानुभूतिरूप अमृतरस. अथवा रसो वै सः । अनुभवरसस्वरूप ते आत्मा ज. तेनी प्राप्ति करवा, ते अनुभवअमृतनुं पान करवा जे भाग्यशाळी थया छे एवा महाभाग्य ज्ञानी पुरुष तथा तेमनो योग पामी तेमनाथी जे कृतार्थ थया छे एवा तेमना आश्रित. एम ज्ञानी अने ज्ञानीना आश्रित बन्ने मोक्षमार्गमां प्रगतिमान होवाथी, ते अनुभव अमृतपाननो योग पामी,

पर प्रेम प्रवाह वढे प्रभुसें,
सब आगम भेद सु उर वसें;
वह केवलको विज ग्यानि कहे,
निजको अनुभौ वतलाई दिये. ८

जुगोजुग एटले अनंत काळ पर्यंत मोक्षरूप अजरामर पदमां विराजित थई अक्षय अनंत जीवन सुखने पामवा महाभाग्यशाळी बने छे, परम कृतार्थरूप धन्यरूप बनी त्रण जगतमां सर्वश्रेष्ठ सिद्धिने पामे छे. ७

८. आम, प्रभु एटले ज्ञानादि ऐश्वर्यरूप आत्मप्रभुता जेमने प्रगट थई छे एवा अनुभव अमृतरसमां निरंतर निमग्न महाभाग्य ज्ञानी गुरुदेव, ते प्रत्ये, तेमना अलौकिक स्वरूप प्रत्ये, पर प्रेम एटले उत्कृष्ट, सर्वोपरी, अनन्य प्रेमनो प्रवाह वधी जाय तो पोतानुं आत्मस्वरूप पण परमार्थे तेवुं ज ऐश्वर्यशाळी छे एम भास्यमान थाय, तेना प्रत्ये भाव, प्रेम, उल्लासनी ऊर्मिओ प्रवहे, जेथी तेनो लक्ष, प्रतीति अने अनुभव प्रगट थाय. तेथी सर्व शास्त्रोनुं रहस्यज्ञान अंतरमां आवीने समाय, प्रकाशे. सर्व शास्त्रोनो उद्देश लक्ष एक आत्मप्राप्ति कराववानो छे. तेथी आत्मज्ञान थतां सर्व शास्त्रोनुं रहस्यज्ञान अंतरमां प्रगटे. ते बीजरूपे छे ते केवळज्ञान थतां संपूर्णपणाने पामे.

बीजनो चंद्र वधतां वधतां जेम पूर्ण पूनमना चंद्ररूपे संपूर्णपणे प्रकाशे छे तेम आ ज्ञानप्रकाश वधतां वधतां केवलज्ञानरूप संपूर्ण ज्ञानप्रकाशने पामे छे. तेथी अनुभव समयनुं जे रहस्य ज्ञान अथवा गुंतेय कारण 'पर प्रेम प्रवाह' तेने ज्ञानीओ केवळज्ञाननुं बीज कहे

छे. बीजमांथी जेम संपूर्ण वृक्ष थई ते पुष्प अने फळे करी युक्त थाय छे, तेम आ बीजज्ञानमांथी संपूर्ण केवळज्ञान दशा प्राप्त थई संपूर्ण परमात्मपद प्राप्त थाय छे, एटले आ ज्ञानस्वरूपनो अनुभव प्रगटावे छे अने ते अनुभव धारा निरंतर अस्खलितपणे चालु रही अखंड अनुभवरसमां रमणतारूप परमात्मपदमां स्थिति कराववा समर्थ बने छे. धन्य छे ते ज्ञानऐश्वर्यने, अने धन्य छे ते अनुभव अमृत रसास्वादी महाभाग्य ज्ञानी सद्गुरुदेवने! ८

७

[२९२/२५८] संत शरणता काव्य मुंबई, अषाड १९४७

विना नयन पावे नहीं, विना नयनकी बात;
सेवे सद्‌गुरुके चरन, सो पावे साक्षात्. १
बुझी चहत जो प्यास को, है बुझनकी रीत;
पावे नहीं गुरुगम विना, एहि अनादि स्थित. २

७

संत शरणता काव्य

१. 'विना नयन' एटले तत्त्वलोचन विना, दृश्य जगतने अदृश्य करवा अने अदृश्य चैतन्यचिंतामणिरूप आत्मतत्त्वने दृश्य करवा, प्रत्यक्ष करवा समर्थ, एवी अंतर्मुख दृष्टि जेनाथी प्राप्त थाय छे ते विचार के ज्ञानरूप अंतचक्षु, तत्त्वलोचन, ते विना, 'विना नयनकी बात' एवो शुद्ध आत्मा, के जे जड एवो देह अने इन्द्रियोथी अतीत होवाथी ते जड नयनरूप नथी, तेम ते जड नयन परमार्थे तेनां नथी, तेवो इन्द्रियातीत आत्मा (तत्त्वलोचन विना) प्राप्त करी शकातो नथी, तेनो साक्षात्कार थई शकतो नथी.

ते विचार के ज्ञानचक्षुरूप दिव्यदृष्टि के तत्त्वलोचन प्राप्त करवा तत्त्वलोचनदायक एवां नयन एटले दोरवणी आपनार परमकृपाळु सद्‌गुरुना चरणनी उपासना विना बीजो कोई अचूक उपाय नथी. जे सद्‌गुरुनां चरणने परम प्रेमे, परा भक्तिए सेवे छे तेने निरंतर आत्ममग्न-दशामां विचरता एवा परमकृपाळु सद्‌गुरुदेव द्वारा विमलालोक अंजन वडे दृष्टि अंजित थतां प्रत्येक देहदेवळमां वसनार आत्मदेवने

८

[१९५/७७] **लघुवये तत्त्वज्ञानी** वि. सं. १९४५

"सुखकी सहेली हे, अकेली उदासीनता;
अध्यात्मनी जननी ते उदासीनता."

लघु वयथी अद्भुत थयो, तत्त्वज्ञाननो बोध;
ए ज सूचवे एम के, गति आगति कां शोध? १

८

लघुवये तत्त्वज्ञानी

उदासीनता = उद् + आसीनता, उत् = above, ऊंचे, रागद्वेष, मोह आदि भावोथी अस्पृश्य उच्च आत्मस्थितिमां 'आसीनता,' बेसवापणुं ए ज अध्यात्मनी जननी, माता छे, अर्थात् उदासीनता विना अध्यात्मनो जन्म संभवतो नथी. माटे एक उदासीनता, वैराग्य, अनासक्तिभाव ए ज सुखने आपनार प्रिय मित्र छे, अथवा ते उदासीनता ज अध्यात्मरूप शुद्ध आत्मदशा प्रगटावनार जननी समान अनन्य कारण छे.

१. नानी वयमां ज तत्त्वज्ञाननो अद्भुत बोध थयो, अर्थात् ज्ञानदशारूप अद्भुत अंतर्जागृति प्रगटी, ए ज एम सूचवे छे के हवे गति एटले अन्य गतिमां जवारूप गमन अने आगति एटले बीजेथी आवीने जन्मवारूप आगमन ए रूप जन्ममरणयुक्त संसारपरिभ्रमण करवानुं के ए रूप विकल्प करवानुं क्यां रह्युं! अर्थात् संसार संबंधी विकल्पने के शंकाने स्थान रह्युं नहि.

जे संस्कार थवो घटे, अति अभ्यासे कांय;
विना परिश्रम ते थयो, भव शंका शी त्यांय? २
जेम जेम मति अल्पता, अने मोह उद्योत;
तेम तेम भवशंकना, अपात्र अंतर ज्योत. ३

अथवा आ काव्य अंगत स्वलक्षी होवाथी ए दृष्टिए अर्थांतर एम पण समजावा योग्य छे के पूर्वे कोई प्रसंगे 'पुनर्जन्म नथी, पाप-पुण्य नथी,' इत्यादि नास्तिक तत्त्वविचार तरंग पोताने आवी गयेल पण पोते अनन्य तत्त्वचिंतक होई तेनुं निवारण करतां एम भावना करे छे—लघुवयथी तत्त्वज्ञाननो अद्‌भुत बोध थयो ए ज एम सूचवे छे के तुं गति—आगति शाने शोधे छे? अर्थात् जन्मांतर प्रत्ये गति, गमन अथवा जन्मांतरमांथी आगति—आगमन छे के नहि? ए तुं शा माटे शोधवा जाय छे? कारण के लघुवयथी तत्त्वज्ञाननो अद्‌भुत बोध थयो ते पूर्वसंस्कार विना बने नहि. माटे पुनर्जन्मादि अंगे तारी शंका अस्थाने छे. १

२. जे ज्ञानसंस्कार अत्यंत अभ्यासे थवा योग्य छे ते तो नानी वयमां ज, परिश्रम विना सहज स्वभावे ज जागृत थया छे, तेथी हवे भव धारण करवा संबंधी शंकाने स्थान ज क्यांथी रहे? २

३. जेम जेम बुद्धिनी, ज्ञाननी अल्पता छे अने मोह, ममत्व, आसक्तिनी प्रगटता वधारे छे तेम तेम अपात्र जीवोना अंतरमां, अज्ञाननी अधिकता होवाथी, तेमने भव—जन्म-मरण संबंधी शंका-भय प्रबळपणे विद्यमान होय छे. ३

करी कल्पना दृढ करे, नाना नास्ति विचार;
पण अस्ति ते सूचवे, ए ज खरो निर्धार. ४
आ भव वण भव छे नहीं, ए ज तर्क अनुकूळ;
विचारतां पामी गया, आत्मधर्मनुं मूळ. ५
[अंगत]

---

४. एवा अज्ञानीओ 'आत्मा नथी' 'धर्म नथी,' 'मोक्ष नथी' इत्यादि अनेक प्रकारना नास्तिक विचारो, फरी फरी कल्पनाओ करीने, दृढ करे छे, छतां ते कल्पनाओ करनार छे तेनुं तो अस्तित्व छे के नहि ? अने ते कोण छे ? एम जरा विचार करे तो तो ते कल्पनानो करनार, जाणनार, देखनार चैतन्य सत्तात्मक आत्मा एवो कोई पदार्थ छे एवुं आत्माना अस्तिपणानुं सूचन, भान थाय. अने ते आस्तिक-पणाथी तत्त्वनो यथार्थ निर्धार थाय ए ज खरो निर्धार छे.

अथवा अर्थांतर एम पण घटे छे के कोई कल्पना करी नाना प्रकारना नास्ति विचार दृढ करे, पण 'अस्ति ते सूचवे' इ०, ते नाना प्रकारना नास्ति विचार ज अस्ति छे एम सूचवे छे. **नास्तिमां—न+अस्तिमां** ज सूचन थाय छे के 'अस्ति' छे. 'अस्ति' विना नास्तिनो विचार पण उद्भवत नहि. ४

५. जेनुं मध्य होय तेनुं पूर्व पश्चात् एटले आगळ पाछळ होवापणुं अवश्य घटे छे. तेम आ भव जो छे तो तेनी पहेलांनो भव पण अवश्य होवो जोईए. पूर्वभव वगर आ भव होवो शक्य नथी. एटले आ जीव आ भवमां ज्यांथी आव्यो ते पूर्वभव अवश्य होवा

योग्य छे. अर्थात् ए विचारणा, न्याययुक्त तर्कथी आत्मानुं अस्तित्व, नित्यत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, आदि सर्व तत्त्व अनुभवमां आववा योग्य छे. माटे ए तर्क, विचारणा तत्त्वप्राप्ति माटे अनुकूळ योग्य साधन छे. तेथी एवी विचारणामां आगळ वधतां विचारवान जीवो आत्मधर्मनुं मूळ, आत्मानुं ज्ञान पामी कृतार्थ थई गया छे.

अथवा अर्थांतरे जेने परीक्षापूर्वक तत्त्वविचारनी श्रेणीए चढवुं छे तेने तो 'आ भव वण भव छे नहीं ए ज तर्क अनुकूळ' आ भव विनानो बीजो भव छे नहि ए ज तर्क अनुकूळ छे; कारण के एवो तर्क करतां तेमां विरोधनी प्रतीति थतां, विचारदशा वर्धमान थतां आत्मधर्मनुं मूळ एवी ज्ञानदशा पामी कृतार्थता थवा योग्य छे.

९

[८०१/३२] धन्य रे दिवस

धन्य रे दिवस आ अहो,
जागी रे शांति अपूर्व रे;
दश वर्षे रे धारा उलसी,
मट्यो उदय कर्मनो गर्व रे. धन्य. १

ओगणीससें ने एकत्रीसे,
आव्यो अपूर्व अनुसार रे;

९

धन्य रे दिवस आ अहो!

१. अहो! आ अद्‌भुत आनंददायी दिवसने धन्य छे के आजे कोई अपूर्व शांति जागी छे. आजे दश वर्षे ज्ञान अने वैराग्यमय अंतरपरिणतिरूप अनुभव अमृत रसनी अपूर्व अंतरधारा उल्लसी छे. आ अंतरधारा जे अंतरंगमां चालु तो हती ज पण बाह्य उपाधि आदि संजोगाधीनपणे जेवी जोईए तेवी उल्लसती नहोती, उल्लसायमान थती नहोती ते 'उल्लसी'—उत्तरोत्तर वृद्धिगत परिणामपणाने पामी प्रगटपणे प्रगटी नीकळी, तेनुं कारण उपाधिरूप पूर्वकर्मनो तीव्र उदय जे रोधक हतो तेनो गर्व मट्यो, तेनुं बळ मट्युं, तेथी अंतरधारा अंतरमां प्रगटेली छतां उल्लसती नहोती ते उल्लसी, प्रगट जळहळी ऊठी छे। १

२. ओगणीसो ने एकत्रीसे, सात वर्षनी वये, अपूर्व अनु-

ओगणीससें ने बेतालीसे,
अद्भुत वैराग्यधार रे. धन्य. २
ओगणीससें ने सुडतालीसे,
समकित शुद्ध प्रकाश्युं रे;
श्रुत अनुभव वधती दशा,
निज स्वरूप अवभास्युं रे. धन्य. ३
त्यां आव्यो रे उदय कारमो,
परिग्रह कार्य प्रपंच रे;
जेम जेम ते हडसेलीए,
तेम वधे न घटे रंच रे. धन्य. ४

सार, जातिस्मृतिज्ञानरूप पूर्वना अनेक भवोनुं ज्ञान थयुं. ओगणीसोने बेताळीशे अद्भुत वैराग्यनी धारा प्रगटी. ते केवो अद्भुत! योगवासिष्ठना वैराग्य प्रकरणमां श्री रामने प्रगटेला वैराग्यनुं कोई अनेरुं वर्णन छे, तेवो अद्भुत वैराग्य प्रगट्यो. २

३. ओगणीसो ने सुडतालीसे शुद्ध निर्मळ सम्यग्दर्शनरूप आत्मज्ञान के अनुभवप्रकाश प्रकट्यो. तेथी श्रुतज्ञान अने अनुभवदशा निरंतर वधती चाली. अने ते वधता क्रमे पोताना शुद्ध आत्मस्वरूपनो अवभास, प्रकाश, साक्षात्कार वृद्धिगत थतो गयो. ३

४. त्यां परिग्रह अने व्यापारादिनी वधती प्रवृत्तिरूप प्रपंचनो कारमो, भयंकर, प्रचण्ड उदय तीव्रपणे आव्यो. ते जेम जेम हडसेलीए, दूर करीए तेम तेम वधतो चाल्यो, पण एक रंच मात्र घट्यो, ओछो थयो नहि. ४

अवश्य कर्मनो भोग छे,
भोगववो अवशेष रे;
तेथी देह एक ज धारीने,
जाशुं स्वरूप स्वदेश रे. धन्य. ८

दशा प्राप्त थशे अने केवळ लगभग भूमिकाने स्पर्शीने देहनो वियोग थशे अर्थात् अपूर्व समाधिमरणरूप मृत्युमहोत्सवने पामीशुं. ७

८. पूर्व प्रारब्धरूप कर्मनो भोग अवश्य भोगववानो बाकी छे तेथी एक ज देह धारीने सर्व कर्म क्षय करीने निज शुद्ध सहजात्म-स्वरूपरूप स्वदेश, सिद्धिपदमां जई बिराजशुं. ८

१०

[६८/१५] ## भक्तिनो उपदेश

तोटक छंद

शुभ शीतळतामय छांय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही,
जिनभक्ति ग्रहो तरु कल्प अहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो. १

१०

भक्तिनो उपदेश

१. त्रण लोकमां सर्व जीवो उपर जेनी एकछत्र आण वर्ते छे एवा राग, द्वेष, मोह आदि अंतरंग शत्रुओने जेणे जीत्या, ते जिन, अरिहंत, वीतराग, सर्वज्ञ, परम आत्मऐश्वर्यपदे युक्त, परमात्मपदे विराजमान, जिनेश्वर भगवाननी भक्ति अहो ! आश्चर्यकारक माहात्म्य-वाळी छे. कल्पवृक्ष समान वांछित फळने ए आपनार छे. तेथी शुभकर्मरूप पुण्य उपार्जन थाय छे अने ते स्वर्गादिमां सुरेन्द्र नरेन्द्रादिनां उत्तम सुखसमृद्धिपूर्णपदे विराजित करे छे; जे ए कल्पवृक्षनी शीतल छाया समान सुखकर छे अने परिणामे अजरामरपद-रूप शाश्वत मोक्षनां अनंत सुखरूप फळने आपे छे. अहो, भव्यो ! आवी कल्पवृक्ष समान अनुपम फळदायक प्रभुभक्तिने तमे धारण करो अने भगवानने भजीने अनंत दुःखमय अपार भवभ्रमणनो अंत आणो. १

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे,
मनताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वणदाम ग्रहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो. २

समभावी सदा परिणाम थशे,
जड मंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो. ३

---

२. भगवाननी भक्तिथी, पोताना स्वरूपनो साक्षात्कार थतां, शुद्ध आत्मस्वरूपनो अतीन्द्रिय आनंद प्रगटे छे, अने तेथी अंतरमां आधि, व्याधि, उपाधिरूप संसारना समस्त ताप तेमज उतापरूप चिंता, फिकर, पीडा आदि दुःख मटी जई परम शांति अने सुख प्राप्त थाय छे.

वळी प्रभुभक्तिथी विनामूल्ये, पूर्वकृत कर्मोनी अत्यंत निर्जरा (एकदेश क्षय) थाय छे. माटे भगवानने भजीने भवभ्रमणनो अंत पामो. २

३. आत्माथी भिन्न अनात्मस्वरूप, जड एवा देहादिमां मोहममत्व होवाथी तेमां रागद्वेष, इष्ट-अनिष्ट आदि शुभअशुभ भावो थया ज करे छे. ते विषम परिणति कर्मबंधनुं कारण थाय छे. भगवाननी भक्तिथी शुद्ध भाव अने स्वरूपदर्शन पमाय छे. तेथी समताभाव के समपरिणति आवे छे, जेथी नवीन कर्मबंध अटके छे अने पूर्वसंचित कर्म क्षय थाय छे. अर्थात् अबंधदशा प्राप्त थाय छे.

शुभ भाव वडे मन शुद्ध करो,
नवकार महापदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो;
भजीने भगवंत भवंत लहो. ४

निगोदादि अधोगतिमां, ज्यां ज्ञान गुण अत्यंत आवरण पामी जई, जीव जड, ज्ञानशून्य जेवो थई अत्यंत दुःख पामे छे, तेवी अधोगतिनां जन्ममरणादिनां दुःख, अबंधदशा प्राप्त थाय तो ज टळे छे-अने त्यारे ज सर्वोत्तम सद्गति के पंचम गतिरूप मोक्षपदने साधी आ जीव परम श्रेय प्राप्त करवा भाग्यशाळी बने छे.

एवो पापने टाळवानो अने मोक्षरूप परम श्रेय पामवानो आ शुभ मंगळदायक योग, अवसर परिपूर्ण रीते सार्थक थाय तेम ईच्छो, यावत् सफळता साधी कृतार्थ थाओ. अर्थात् भगवानने भजीने भवभ्रमणनो अंत आणो. ३

४. मन निरंतर अशुभ भावो, पापना विचारोथी अशुद्ध, मलिन थई रह्युं छे, तेने प्रभुस्मरणरूप भक्तिमां जोडी शुभ भावो वडे शुद्ध, निष्पाप, पवित्र बनावो. अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु भगवान ए पांचेय शुद्ध सहज आत्मस्वरूपनां अनुभव-सुखमां विराजित होवाथी **परमे स्थिताः परमेष्ठिनः** परम पदे स्थित एवा परमेष्ठि भगवान कहेवाय छे. तेमने नमस्कार करवारूप जे नवकारमंत्र के परमेष्ठिमंत्र तेमां मनने लीन करी, जगतमां सर्वोत्तम एवां ए पांच परमपद तेनुं स्मरण ध्यान चिंतवन करो. ए मंत्र जेवो

करशो क्षय केवळ राग कथा
धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा;
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो. ५

उत्तम बीजो मंत्र कह्यो नथी. माटे ए भगवानने भजीने भवभ्रमणनो अंत आणो. ४

५. परद्रव्यमां अल्प पण मोह, ममता रागभाव छे त्यां सुधी सर्व शास्त्रोनो जाणनार पण मुक्त थतो नथी. तेथी रागद्वेष, मोह आदि कर्मबंधनां कारणो, तेनी कथा, सर्वथा तजी देशो तो ज पवित्र एवुं आत्मतत्त्व हृदयमां धारण करवा, अने तेने प्रगट करी सदाय तेथी विराजित रहेवा, भाग्यशाळी थशो. परम तत्त्वज्ञ श्रीमद् राजचंद्र कहे छे के आत्मज्ञानथी प्रगटता आत्मध्यानरूप प्रबळ अग्नि वडे कर्मना अनंत प्रपंचने, विस्तारने, मायाजाळने बाळी भस्म करी दो, अने शुद्ध सहज आत्मस्वरूप एवा भगवानने भजीने भवभ्रमणनो अंत आणो. ५

पळमां पड्या पृथ्वीपति ए भान भूतळ खोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने. २

दश आंगळीमां मांगलिक मुद्रा जडित माणिक्यथी,
जे परम प्रेमे पे'रता पोंची कळा बारीकथी;
ए वेढ वींटी सर्व छोडी चालिया मुख धोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने. ३

मूंछ बांकडी करी फांकडा थई लींबु धरता ते परे,
कापेल राखी कातरा हरकोईनां हैयां हरे;
ए सांकडीमां आविया छटक्या तजी सहु सोईने,
जन जाणीए मन मानीए नव काळ मूके कोईने. ४

वामां कशीय कचाश राखता नहोता एवा राजाधिराज पण पळमां वेभान थईने, पृथ्वी उपर पडी, मरण पामी गया छे. माटे हे भव्यजनो! नक्की जाणजो अने मनमां चोक्कस मानजो के काळ कोईने य मूकनार नथी. २

३. दशेय आंगळीमां जे माणेक जडेली सुंदर वींटीओ पहेरता हता तथा कांडामां सुवर्णनी झीणी नकशीनी कारीगरीवाळी पोंची परम प्रीतिपूर्वक पहेरता हता, ते सर्व वेढ अने वींटी आदि छोडीने, मों धोईने, चाल्या गया. माटे हे भव्यो! आ नक्की जाणजो अने मनमां चोक्कस मानजो के काळ कोईनेय मूकनार नथी. ३

४. जे वांकी मूछ करीने, फांकडा थईने ते उपर लींबु राखता हता, तथा जे सुंदर कापेला वाळथी सौ कोईनां मनने आकर्षता हता, ते पण संकटमां पडीने, सर्व सगवडो मूकीने

न देतां, दृश्यने अदृश्य करी, अदृश्यने दृश्य करी, अंदर रहेला चैतन्यने जोउं, अंतर दृष्टिथी सर्वत्र आत्मा, आत्मा, तुंहि, तुंहि, एक ए ज परमात्मतत्त्वने जोउं, सर्व आत्माओनुं अने मारुं मूळ शुद्ध चैतन्य आनंदघन परमात्मस्वरूपने चिंतवुं, भावुं, ध्यावुं, अनुभवुं तो केवुं अपूर्व आत्मश्रेय सधाय? दरेक शरीरमां विराजमान चैतन्यस्वरूप आत्मा तो मूळ शुद्ध चिदानंद ज्ञानमय परब्रह्म परमात्मा समान ज छे. तेथी, गुरुगमे प्राप्त अंतरंग दृष्टिथी साध्य, ए शुद्ध चैतन्य ज्ञानानंदमय परब्रह्म स्वरूप मारा आत्मामां वृत्तिनी एकाग्रतारूप रमणता के चर्यारूप ब्रह्मचर्य ए ज अहो मारुं सर्वोपरी ध्येय! ए मारा अद्भुत अचिंत्य सुखनिधान स्वरूपानंदने मूकीने अन्यत्र अल्प पण सुखनी संभावना संभवे ज क्यांथी? 'जगत इष्ट नहि आत्मथी,' अथवा 'आत्माथी सौ हीन' ए परम कृपाळु ज्ञानीओनो निष्कर्षरूप परम निश्चय, असार भोगथी वैराग्य अने परब्रह्मरूप निज स्वरूपमां वृत्तिनी रमणता, चर्यारूप ब्रह्मचर्यनुं उत्कृष्ट माहात्म्य प्रतिबोधे छे. तथा मारा अंतरंग आत्मिक साम्राज्यरूप अनंत ज्ञानादि स्वाभाविक आत्मैश्वर्य आगळ आ जगत के त्रण लोक तृण समान तुच्छ छे तो आवां काई पण प्रलोभनो मने मोह, ममत्व के आसक्तिनुं कारण बनी शके ज केम? इत्यादि सद्बोधना प्रबळ अवलंबने, ब्रह्मचर्यरूप अमूल्य महा व्रत विभूषित जे ब्रह्मनिष्ठ विवेकी महात्मा सुंदर स्त्रीना रूपथी लेश पण विकार पामवाने बदले स्त्रीना शरीरने जड लाकडाना पूतळा जेवुं गणे छे अने पोते निर्विकार परमानंदमय परब्रह्मनी भावनामां तन्मय रही

पराधीनपणे मंड्या रहेवुं पडे छे. ते कारणे सत्संग, सद्बोध आदि परमार्थ आराधवानो के निजविचार कर्तव्यरूप धर्मथी आत्मश्रेय साधवानो अल्प पण अवकाश प्राये प्राप्त थतो नथी. जेथी अमूल्य मनुष्यभव आदि दुर्लभ जोग व्यर्थ गुमावी दई, अमूल्य कमाणी हारी जवा जेवुं थाय छे.

'जो के स्त्रीमां दोष नथी, पण आत्मामां दोष छे, अने ए दोष जवाथी आत्मा जे जुए छे ते अद्भुत, आनंदमय ज छे, माटे ए दोषथी रहित थवुं' ए ज श्रेयस्कर छे. तेथी स्त्रीने पर्याय दृष्टिथी जोवा करतां द्रव्य दृष्टिथी, आत्मारूपे जोवाय तो निर्विकार दृष्टि साध्य थाय अने सर्व श्रेयनुं मूळ एवुं ब्रह्मचर्य प्राप्त थाय.

तेथी जेणे स्त्रीनो, स्त्री प्रत्येना मोहनो, आसक्तिनो त्याग कर्यो तेणे वास्तविक रीते आखा संसारनो, संसार उपाधिना मूळनो त्याग कर्यो एम ज्ञानीओ कहे छे. कारण तेथी जीव अन्य सर्व बंधनो टाळी निरारंभी अने निष्परिग्रही थई, सद्गुरुनी आज्ञा आराधवामां जीवन समर्पण करी, सत्संग सद्बोधना प्रतापे स्वपर श्रेयने साधी परम कृतार्थ थई जाय छे.

माटे जेणे एक अब्रह्मनो त्याग कर्यो तेणे वास्तविक रीते केवळ शोकस्वरूप अने त्यागवा योग्य एवुं सर्व—नरनणतारूप अकार्य—त्यागी दीधुं. ए ज कारणथी पांचेय महाव्रतमां ब्रह्मचर्य महाव्रतने सर्वोपरी गण्युं छे.

जेनी केडनो भंग थाय छे, तेनुं प्राये बधुं बळ परिक्षीणपणाने पामे छे, तेम जेने ज्ञानीना कृपाप्रसादे ब्रह्मव्रतनी प्राप्ति थाय छे तेने

पोतानी पासेनुं धनादि कोण लई ले छे? पोते शुं बकवाद करी रह्यो छे इत्यादि कंई भान रहेतुं नथी अने अज्ञान, बेभानपणुं वधी जाय छे, तेम अल्प पण कामभोगनी इच्छारूप विषयनुं मूळ जो अंतःकरणमां ऊगे छे तो उत्तम ज्ञानध्यानमां प्रवर्तता एवा आत्माओ पण त्यांथी पतित थई जाय छे.

जेने आत्मज्ञान थयुं छे तेवा ज्ञानीओनो पुरुषार्थ विषय-कषायनो जय करी निरंतर स्वाध्याय-ध्यानादिथी अनुभव आनंदमां निमग्न रहेवानो होय छे. तेवा ज्ञानीओना हृदयमां पण जो विषयवासनानां मूळ ऊगी नीकळे, अर्थात् अल्प पण कामेच्छा जागे तो तेमने पण ते ज्ञान-ध्यान आदि आत्मोन्नतिनां उन्नत शिखरेथी पतित थई जतां वार लागती नथी तो पछी तेथी न्यून भूमिकामां रहेला मुमुक्षुए केटली वधी जागृति राखवी घटे छे ते विचारवा योग्य छे.

" 'मोहनीय'नुं स्वरूप आ जीवे वारंवार अत्यंत विचारवा जेवुं छे. मोहिनीए महा मुनीश्वरोने पण पळमां तेना पाशमां फसावी अत्यंत रिद्धिसिद्धिथी विमुक्त करी दीधा छे, शाश्वत सुख छीनवी क्षणभंगुरतामां ललचावी रखडाव्या छे.

निर्विकल्प स्थिति लाववी, आत्मस्वभावमां रमणता करवी, मात्र दृष्टाभावे रहेवुं, एवो ज्ञानीनो ठाम ठाम बोध छे; ते बोध यथार्थ प्राप्त थये आ जीवनुं कल्याण थाय." —श्रीमद् राजचन्द्र

विषयनुं आवुं दुर्जयपणुं जाणी नाहिंमत न थतां अप्रमत्त पुरुषार्थथी तेनो पराजय करवा सद्बोध शास्त्रनो सतत उपयोग परम अवलंबनरूप थाय छे.

सुंदर शियळ सुरतरु, मन वाणी ने देह;
जे नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह. ६

पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिक ज्ञान;
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान. ७

समुद्र सहेजे तरी जई तेने कांठे आवी जाय छे तेने अल्पमात्र संसार बाकी रहे छे. तेथी ते शीघ्रमुक्तिगामी बने छे, एम तत्त्वज्ञोनुं कथन छे. ५

६. आ शियळरूप सुंदर कल्पवृक्षने जे भाग्यशाळी नरनारीओ मन वचन कायाथी सेवशे ते स्वर्ग अने मोक्षना अनुपम सुखरूप सर्वोत्तम फळने पामशे अने मनुष्यभव आदि सर्व दुर्लभ जोगनी सफळता साधी परम धन्यरूप बनशे. ६

७. जेम सिंहणनुं दूध माटीना वासणमां टके नहि पण तेने माटे सुवर्णनुं पात्र जोईए तेम आत्मज्ञान रही शके एवी पात्रता प्राप्त थवा तथा तेमां स्थिति थाय तेवी योग्यता आववा ब्रह्मचर्य सर्वोपरी साधन छे. माटे हे मतिमान मुमुक्षुओ ! तमे सदाय ब्रह्मचर्यनुं पालन करो.

" पात्र विना वस्तु नहि रहे, कारण के वस्तु माटे भाजन जोईशे. पाणी आदि माटे पात्र जोईए तेम पात्रता माटे ब्रह्मचर्य छे. ए मोटो थंभ छे. जो मन विषयविकारमां जाय तो कटार लईने मरी जजे, झेर खाजे. जीवने आत्मानुं भान नथी, खबर नथी. जीवने एक सार वस्तु मोटामां मोटी ब्रह्मचर्य छे. पोतानी के पारकी स्त्री सेवन न करवी. आखो लोक स्त्रीथी बंधाणो छे. अने तेथी जन्ममरण थशे. माटे ए मूक. मूक्या वगर छूटको नथी. ए चमत्कारी वात छे. जे ए देशे

४ जे गायो ते सवळे एक, सकळ दर्शने ए ज विवेक;
समजाव्यानी शैली करी, स्याद्वाद समजण पण खरी. १

भाव जागवो जोईए. वैराग्य होय तो गुरु ज्ञानी छे के नहि ते ओळखाय. ते वैराग्य पूर्वनां पुण्यरूप महाभाग्य होय तो अथवा पूर्वे धर्मआराधना करी होय तो सहेजे पमाय. नहि तो आ भवमां पण जो कंई सत्संगनो जोग बने अने तेनो रंग लागे तो साचो वैराग्य जागे. अथवा पोतानां अत्यंत प्रिय मानेलां एवां स्त्री, पुत्र, मित्र, धन आदिना वियोगना के शारीरिक व्याधि आदिना कोई दुःखना प्रसंग प्राप्त थतां संसार आवो ज असार, अनित्य, अशरणरूप, दुःखथी भरपूर छे एम समजाई ते प्रत्ये वैराग्य जागे अने तो आत्महितनी इच्छाथी सद्‌गुरुनो योग शोधे तो मार्गने पामी कृतार्थ थवाय. १-२

(४)

१. सर्व दर्शनो, धर्ममतोए पोतपोतानी जुदी जुदी शैलीमां एक ए ज परमात्मतत्त्वने गायुं छे. तेमज संसार असार अने केवळ दुःखरूप होवाथी तेने तजवानो अने एक ए ज परमात्मस्वरूपने भजवानो विवेक विचार पण सर्व दर्शनोमां पोतपोतानी शैलीए दर्शावेलो जणाय छे. परंतु ते यथार्थ संपूर्ण समजाववा माटे तो वस्तुना अनंत गुणधर्मोने अनुलक्षीने सर्वज्ञ भगवाने जे स्याद्वाद शैली प्ररूपी छे ते खरी, यथार्थ, सर्वोत्तम छे. तेथी वस्तुनुं सर्वांग वास्तविक संपूर्ण यथातथ्य ज्ञान, समजण प्राप्त थाय छे. १

राजु असंख्याता द्वीप समुद्र प्रमाण मापे छे. पूर्व पश्चिम दिशामां जेम वधतो घटतो विस्तार छे तेम उत्तर दक्षिणमां नथी; तेमां सर्वत्र लोकनो विस्तार सात राजु प्रमाण छे. लोकनी ऊंचाई चौद राजु प्रमाण छे अने क्षेत्रफळ ३४३ घन रज्जु प्रमाण छे. लोकना मध्यमां एक राजु लांबी, एक राजु पहोळी अने चौद राजु ऊंची त्रसनाळी छे. त्रस जीवो आ त्रसनाळीमां ज छे. तेनी बहार लोकमां सर्वत्र मात्र एकेन्द्रिय जीवोनो वास छे.

लोकनी मध्यमां वलयाकार स्थित एक लाख योजनना विस्तार-वाळा जंबुद्वीपनी मध्यमां एक लाख योजननी ऊंचाईवाळो मेरुपर्वत छे. जंबुद्वीपनी फरता बमणा बमणा विस्तारवाळा असंख्याता द्वीपसमुद्र छे. तेमां अढी द्वीप सुधी ज मनुष्योनो निवास छे. बाकीनामां तिर्यंच अने व्यंतर देवोना निवास छे. आ मध्यलोकमां उपर ज्योतिषी देवोनां विमानो छे. तेनी उपर वैमानिक देवोनां विमान छे. तेनी उपर नव ग्रैवेयेक विमानो, पांच अनुत्तर विमानो अने छेक उपर सिद्धशिला छे. आ ऊर्ध्वलोक कहेवाय छे. मध्यलोकनी नीचे आवेला अधोलोकमां अनुक्रमे सात नरकभूमिनी रचना छे. तेनी नीचे निगोद जीवोनो वास छे. लोकनुं स्वरूप आ संक्षेपमां अत्रे जे जणाव्युं छे तेनो विस्तार अन्य त्रिलोकसार, त्रिलोकप्रज्ञप्ति, स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा, द्रव्यसंग्रह आदि ग्रन्थोथी जाणवा योग्य छे.

आ लोक सर्वत्र जीव अजीवथी संपूर्ण भरपूर छे. तेमां रहेला धर्म (गतिनां उदासीन सहायक), अधर्म (स्थितिनां उदासीन

जीवाजीव स्थितिने जोई,
टळ्यो ओरतो शंका खोई;
एम ज स्थिति त्यां नहीं उपाय;
'उपाय कां नहीं?' शंका जाय. ३

---

३. इत्यादि प्रकारे सर्वज्ञोपदिष्ट लोकनुं स्वरूप विस्तारथी जाणतां तेमां रहेला जीवअजीवादि द्रव्योनी स्थिति जोई तत्संबंधी जिज्ञासा परितृप्त थई, आतुरता मटी शंका हती ते टळी गई. निःशंकता प्राप्त थई. लोक त्रणे काळ ए रूपे रहेवानो छे. तेने अन्यरूपे करवा कोई पण उपाये कोई पण समर्थ नथी. ते अन्यरूपे केम न बने? वगेरे शंकाओनुं समाधान थई गयुं. ३

४. जे आ सर्व आश्चर्यकारक स्वरूप जाणे ते ज्ञानी छे. आ छ द्रव्यात्मक लोकनुं संपूर्ण ज्ञान तो जेने केवळज्ञान भास्कर अंतरमां प्रगटे तेने थाय. ते ज्ञानमां जणाय के लोकमां बंधनदशामां रहेला संसारी जीवो छे तथा बंधरहित मुक्तदशामां विराजमान सिद्ध परमात्माओ लोकाग्रे अनंत सुखमां सदाने माटे स्थिति करी रह्या छे. संसारस्थ सौ जीवो पोतपोतानां बांधेलां कर्मोथी संसारपरिभ्रमण करी रह्या छे, तेमांथी जे कर्म टाळवा पुरुषार्थ करी मुक्त थवा प्रवर्ते छे ते मुक्त थाय छे. बीजा कोई बीजानां कर्मो लई शके के टाळी शके तेम नथी. तेथी आवी संसारनी स्थिति जोई तेथी उदासीन थई सदाने माटे हर्षशोक टाळी ते वीतराग भगवान सदैव समता सुखमां निमग्न थाय छे. ४

सर्व काळनुं छे त्यां ज्ञान, देह छतां त्यां छे निर्वाण,
भव छेवटनी छे ए दशा, राम धाम आवीने वस्या. २

प्रतापे अंतर्भेद जागृति पामी जीवने आत्मदर्शनरूप अपूर्व तत्त्वदृष्टि प्राप्त थाय तो पोताना परमात्मतत्त्वनुं अचिंत्य अनुपम सर्वोत्तम माहात्म्य समजाय, लक्षगत थाय, तेथी तेना अनुभव अमृतरसमां निमग्न रहेवानी निरंतर तीव्रता रहे; अने ते सिवाय 'जगत् इष्ट नहि आत्मथी, अथवा आखुं जगत ते तृणवत् तुच्छ लागतां ते प्रत्ये वैराग्य, उदासीनता, वीतरागता, समताभाव जागे; अने ज्यां ए उदासीनतानो अंतरमां निरंतर वास थाय त्यां मोहनीयादि घाती कर्मोनो नाश थई अनंत चतुष्टयरूप परमात्मस्वभावनी प्राप्ति थाय. त्यां सर्व दुःखनो नाश थई अनंत सुखमय परमपद प्राप्त थाय. १

२. ए परमपद प्राप्त थतां त्यां सर्वकाळनुं ज्ञान प्राप्त थाय छे अने देह छतां साक्षात् मुक्ति समान देहातीत जीवन्मुक्त दशानो अनुभव थाय छे. जेने छेल्लो भव होय ते महाभाग्यशाळी जीवो एवी सर्वोपरी दशा पामे छे. तेओ आत्मारामी निरंतर स्वरूपे रमता राम पोताना सहज स्वरूपरूप निज धाम, स्वभाव समाधिरूप निज मुक्तिमंदिरमां निरंतर निवास करीने रहे छे अने अनादिनुं परघर परिभ्रमणरूप संसारमां रझळवानुं टाळीने अनंत शांति अने सुखमां निमग्न बनी सदाने माटे धन्यरूप कृतार्थरूप बने छे. २

*

खोज पिंड ब्रह्मांडका, पत्ता तो लग जाय;
येहि ब्रह्मांडि वासना, जब जावे तब....
आप आपकुं भूल गया, ईनसें क्या अंधेर?
समर समर अब हसते हैं, नहि भूलेंगे फेर.

---

३. पोताना पिंड, देहमां शाश्वत देवनी खोज कर, शोध कर 'एक निजस्वरूपने विषे दृष्टि दे, के जे दृष्टिथी समस्त सृष्टि ज्ञेयपणे तारे विषे देखाशे.' अर्थात् देहमां पोताना स्वरूपनी अंतरशोध करतां, आत्मस्वरूपनो अनुभव प्राप्त थशे. अने ते निरंतर वर्धमान थतां, ब्रह्मांड एटले समस्त विश्वनुं ज्ञान थाय तेवी केवळज्ञानदशा प्राप्त थशे.

परंतु ते प्राप्त क्यारे थाय? अर्थात् साची अंतरशोध जागे क्यारे? ते त्यारे जागे के ज्यारे आ ब्रह्मांडि वासना, एटले जगतनी मायामां जे प्रेम-प्रीति छे ते टळे, ते मायिक सुखनी वासना, मायिक प्रपंचोनी रुचि टळी जाय, निवृत्त थाय तो ज देहाध्यास मटी, आत्मदेवनी साची शोध अंतरमां जागे अने परिणामे आत्मप्राप्ति थाय. ३

४. अहोहो! आ जीव पोते, पोताने ज, पोताना मूळ स्वरूपने ज भूली गयो! अने देहादि परने पोतानुं स्वरूप मानी ते देहाध्यास के आत्मभ्रान्तिथी अनंतकाळनां परिभ्रमणनां दुःखरूप संसारदरियामां जई पड्यो! पोते पोताने भूली गयो ते खरेखर आश्चर्यजनक आपत्ति जेवुं, एना जेवुं बीजुं अंधेर कयुं?

हवे ते भूल समजातां, फरी फरीने ते भूल याद आवतां, ने पोतानी मूर्खता, अणसमजण उपर हसवुं आवे छे. अने

जिन सोही है आतमा, अन्य होई सो कर्म,
कर्म कटे सो जिनवचन, तत्त्वज्ञानीको मर्म. ३

जब जान्यो निजरूपको, तब जान्यो सब लोक,
नहि जान्यो निजरूपको, सब जान्यो सो फोक. ४

स्याद्वाद दर्शन छे. कथानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग अने द्रव्यानुयोग ए चार अनुयोगद्वारा तेमां अचिंत्य, अद्भुत, अनुपम, आत्मश्रेयस्कर अमूल्य बोधनी प्ररूपणा छे तेथी समस्त जगत जीवोनुं परम श्रेय मथाय तेम छे. २

३. जिन छे ते आत्मा, अंतरंगशत्रु रागद्वेषादिने जीतनारा शुद्ध आत्मा छे. अने आत्माथी बीजुं जे छे ते कर्म छे. ते कर्मने कापे, नाश करे, आत्माने कर्मनां बंधनोथी मुक्त करवा समर्थ बने ते जिनवचन, ज्ञानी पुरुषनां वचन छे. तत्त्वज्ञानीओए आ मर्म, रहस्य प्रकाश्युं छे के आत्माने कर्मथी मुक्त करवा जे बळवान उपकारी थाय ते जिनवचन छे. एना जेवां बीजा कोईनां वचन संसारबंधनो छेदवा बळवान सहायक थाय तेम नथी. ३

४. जो पोताना आत्माने ओळख्यो अर्थात् पोतानुं जे शुद्ध सहज आत्मस्वरूप छे तेनो साक्षात्कार थयो, तेनुं यथार्थ ज्ञान थयुं तो तेणे सर्व लोकने जाण्यो; अर्थात् तेणे जाणवा योग्य एक पोतानुं आत्मस्वरूप जो जाण्युं तो तेने लोकालोक सर्वने जाणनार केवळज्ञाननी प्राप्ति थाय छे. अने ते सर्वज्ञ थई परम कृतार्थ थाय छे. परंतु ज्यां सुधी पोताना आत्माने न जाण्यो त्यां सुधी गमे ते जाण्युं

एहि नहि है कल्पना. एहि नहि विभंग,
जब जागेंगे आतमा, तब लागेंगे रंग. ७

---

७. आ कथन ते मात्र कल्पना एटले असत्य नथी. तेम विभंग एटले मिथ्याज्ञान के अज्ञान नथी पण यथार्थ सत्य छे, के ज्यारे आत्मा जागृत थशे, पोतानी वर्तमान बंधनयुक्त दुःखमय दशाने टाळवा कटिबद्ध थई पुरुषार्थयुक्त थशे त्यारे ज तेने सत्नो रंग लागशे. त्यारे ज तेने सत्स्वरूप ज्ञानीओ, तेमनो सत्ने प्राप्त करावनारी अपूर्व आज्ञा, उपदेश आदि प्रत्ये भाव भक्ति उल्लास प्रेमनो प्रवाह वधी जशे अने त्यारे ज कृतार्थतानो मार्ग प्राप्त थशे. ७

नहीं ग्रंथमांहि ज्ञान भाख्युं, ज्ञान नहीं कवि चातुरी,
  नहीं मंत्र तंत्रो ज्ञान दाख्यां, ज्ञान नहीं भाषा ठरी;
नहीं अन्य स्थाने ज्ञान भाख्युं, ज्ञान ज्ञानीमां कळो,
  जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो सांभळो. २

ज कह्युं छे. ए पूर्व आदिनुं ज्ञान भगवाने एटला माटे प्रकाश्युं छे के जीव पोताना अज्ञान रागद्वेषादि दोषने, कर्ममळने टाळीने शुद्ध निर्मळ निज आत्म तत्त्वनी प्राप्ति करी कृतार्थ थाय.

एटला माटे शास्त्राभ्यासथी के ज्ञानीना बोधना श्रवणथी जीव बहिर्मुखदृष्टि त्यागी अंतर्मुखदृष्टि साध्य करी पोताना आत्मतत्त्वने जोवामां जाणवामां अनुभववामां जागृत थाय, तथारूप परिणति पामी पोताना अज्ञानादि दोष टाळी निज शुद्ध सहज आत्मस्वरूपने प्रगटावे तो ते ज्ञानाभ्यास सफळ थाय अने तो ते सर्व ज्ञानने जिनेन्द्र भगवाने सम्यग्ज्ञान या यथार्थ ज्ञान कह्युं छे. १

२. ज्ञान तो आत्मानो गुण छे तेथी चेतनरूप छे. ते आत्मानो जेणे अनुभव कर्यो छे, साक्षात्कार कर्यो छे तेवा ज्ञानी पुरुष पोते प्रगट ज्ञानमूर्ति छे. ते देहमां रहेवा छतां देहातीत दशामां विचरतां साक्षात् ज्ञानपरिणतिथी कोई अद्भुत रीते अकळदशामां अंतरंग [illegible] छे, अनुभवना [illegible] छे. [illegible]

केवळ नहि ब्रह्मचर्यथी, ...

... .

केवळ नहि संयम थकी, पण ज्ञान केवळथी कळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो सांभळो. ४

अव्यक्त रीते संसार वासनानुं मूळ विद्यमान होवाथी संसारसुख, स्वर्गादिना दिव्यभोग आदिनी कामना के निदान बुद्धि रहे छे, तेथी ते मोक्षार्थे सफळ थता नथी. पांचमा अंगमां, भगवती सूत्रमां ए विषे केवळ निर्मळ बोध प्रकाश्यो छे. सम्यग्दृष्टिनुं ज्ञान यथार्थ ज्ञान छे अने तेथी तेनो वैराग्य वास्तविक वैराग्य छे. विषयभोगनी आसक्तिनुं मूळ तेमांथी गयुं होवाथी तेनां पच्चक्खाणादि सर्व त्याग एक मोक्षार्थे ज थाय छे. माटे पच्चखाण आदिनो आग्रह करवा करतां सम्यग्दर्शन प्राप्ति माटे प्रथम लक्ष अने पुरुषार्थ कर्तव्य छे. जेथी यथार्थ ज्ञान वैराग्य त्याग आदिनी प्राप्ति थई मोक्षार्थ साध्य थाय छे. ३

४. पांच महाव्रतोमां ब्रह्मचर्य ए सर्वोत्तरो व्रत गण्युं छे, परंतु तेथी पण ज्ञान थतुं नथी. उपलक्षणथी पांचेय महाव्रत धारण करी, साधुपणुं ग्रहण करवाथी पण आत्मानी प्राप्ति थाय ज अथवा ज्ञान थई गयुं एम नथी. अर्थात् सर्वविरति सर्व त्याग ग्रहण करी संयमनुं पालन करवाथी पण ज्ञान थयुं एम मनाय नहि. ज्ञानप्राप्तिनुं अनन्य कारण तो केवळ शुद्ध आत्मा छे, तेनो अनुभव छे. तेथी देहादिथी भिन्न निज निर्मळ चैतन्यघन आत्माने अंतरभेद ज्ञानपूर्वक ग्रहवो. ज्ञान त्यां

केवळ नहि ब्रह्मचर्यथी, ...
... .
... .
... .
केवळ नहि संयम थकी, पण ज्ञान केवळथी कळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो सांभळो. ४

अव्यक्त रीते संसार वासनानुं मूळ विद्यमान होवाथी संसारसुख, स्वर्गादिना दिव्यभोग आदिनी कामना के निदान बुद्धि रहे छे, तेथी ते मोक्षार्थे सफळ थता नथी. पांचमा अंगमां, भगवती सूत्रमां ए विषे केवळ निर्मळ बोध प्रकाश्यो छे. सम्यग्दृष्टिनुं ज्ञान यथार्थ ज्ञान छे अने तेथी तेनो वैराग्य वास्तविक वैराग्य छे. विषयभोगनी आसक्तिनुं मूळ तेमांथी गयुं होवाथी तेनां पचखाणादि सर्व त्याग एक मोक्षार्थे ज थाय छे. माटे पचखाण आदिनो आग्रह करवा करतां सम्यग्दर्शन प्राप्ति माटे प्रथम उद्यम अने पुरुषार्थ कर्तव्य छे. जेथी यथार्थ ज्ञान वैराग्य त्याग आदिनी प्राप्ति थई मोक्षार्थ साध्य थाय छे. ३

४. पांच महाव्रतोमां ब्रह्मचर्य ए सर्वोत्तम व्रत गण्युं छे, परंतु [illegible] पांचे महाव्रत धारण करी, तेथी पण ज्ञान थतुं नथी. [illegible] प्राप्ति थाय ज [illegible] ज्ञान थई साधुपणुं ग्रहण करवाथी पण ज्ञाननी [illegible] करी संयमनुं पालन [illegible] गयुं एम नथी. अर्थात् सर्वविरति सर्वत्याग ग्रहण [illegible] करवाथी पण ज्ञान थयुं एम गणाय नहि. [illegible] तेथी देहादिथी भिन्न [illegible] तो केवळ शुद्ध आत्मा छे, तेनो अनुभव छे. [illegible] ज्ञान [illegible] [illegible] वीतरागे [illegible] भावपूर्वक सांभळो.

आठ समिति जाणीए जो, ज्ञानीना परमार्थथी,
तो ज्ञान भाख्युं तेहने, अनुसार ते मोक्षार्थथी;
निज कल्पनाथी कोटि शास्त्रो, मात्र मननो आमळो,
जिनवर कहे छे ज्ञान तेने, सर्व भव्यो सांभळो. ६

मानमां ज्ञान थयुं नथी ज एम विवेक होय, तो साचा ज्ञानीना, 'भावथी साचा मने' आश्रित बनो, तो जरूर ज्ञानप्राप्ति थशे. सन्मति तर्क आदि शास्त्रोमां ए वात दर्शावी छे. ज्ञानी पासेथी जे ज्ञानप्राप्ति थाय छे तेने ज भगवान ज्ञान कहे छे. माटे ते ज्ञाननुं श्रवण मनन परिणमन करी हे भव्यो, शास्त्रज्ञाननी सफळता थाय तेम आत्मश्रेयने साधो. ५

६. 'सतत अंतर्मुख उपयोगे स्थिति ए ज निर्ग्रंथनो परमार्थ छे.' अंतर्मुख उपयोगे आत्मस्वभावमां निरंतर निमग्न रहेवाना लक्षे मन वचन अने कायानी प्रवृत्तिनो निरोध करीने स्वरूपमां जेथी करीने गुप्त रहेवाय ते गुप्ति अने ज्यारे स्वरूपस्थित उपयोग आहारादि देहनी क्रिया अर्थे बहार प्रवर्ताववो पडे त्यारे पण अंतर्मुख उपयोगनो लक्ष न चूकाय ते प्रमाणे जेम ज्ञानीनी आज्ञा छे ते प्रमाणे ज ज्ञाना उपयोगपूर्वक (१) चालवुं पडे तो चालवुं. (२) बोलवुं पडे तो बोलवुं. (३) आहारादिनुं ग्रहण करवुं. (४) वस्त्रादिनुं लेवुं मूकवुं. (५) दीर्घशंकादि मलनो त्याग करवो ए पांच समिति, [illegible] इति, [illegible], आगमोमां कही छे ए त्रण गुप्ति अने पांच समितिनुं [illegible] स्वरूप, जेनो परमार्थ जो ज्ञानी पासेथी समजवामां आवे तो ते मोक्षार्थीने

एवां मूळ ज्ञानादि पामवा रे,
अने जवा अनादि बंध; मूळ०
उपदेश सद्गुरुनो पामवा रे,
टाळी स्वच्छंद ने प्रतिबंध. मूळ० १०

---

१०. एवां मूळ ज्ञानादिनी प्राप्ति थाय अने अनादिना कर्मबंध टळी जई जीव मुक्त थाय ते माटे आत्मज्ञानी सद्गुरुनो उपदेश पामवो जोईए; अने ते उपदेश अंतरमां परिणमे ते माटे तेमां मुख्य विघ्नरूप स्वच्छंद अने प्रतिबंधनो त्याग करवो जोईए.

अज्ञानदशा टाळवा माटे ज्ञानी परमकृपाळु सद्गुरुनुं शरण, बोध, भक्ति, आज्ञा सर्वार्पणपणे आराधाय तो ए ज सर्वोपरी साधन छे. ते साधना सफळ न थवा दे एवो स्वच्छंद ते महान शत्रु छे. परमार्थना नामे जपतपादि पोतानी मेळे पोताने गमे तेवां साधनो कर्यां एवां अने हुं परमार्थ साधुं छुं एम मानवुं, तेमज पोते परमार्थ जाण्यो नथी छतां आ हुं जाणुं छुं, हुं समजुं छुं तेमज परमार्थ छे, अथवा परमार्थ आम होय के तेम होय इत्यादि पोतानी कल्पना प्रमाणे परमार्थनो आग्रह राखी तेवी प्रवर्तना करवी ते स्वच्छंद छे. ज्ञानीनी आज्ञा आराधवा तत्पररूप अवकाश प्राप्त न थवा दे अथवा विघ्नरूप बने तेवां जे जे द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावथी, मोहाधीन एवा जीवने त्यां रहेवानां, बंधाई रहेवानां निमित्तो थाय छे ते सर्व प्रतिबंध छे. लोकसंबंधी बंधन, स्वजन, कुटुंब बंधन, देहाभिमानरूप बंधन अने संकल्पविकल्परूप बंधन ए चार मुख्य प्रतिबंध कह्या छे. मोह-

१९

[५६०/७२४] **पंथ परम पद** ववाणिया, कार्तिक, १९५३

(गीति)

पंथ परमपद बोध्यो, जेह प्रमाणे परम वीतरागे,
ते अनुसरी कहीशुं, प्रणमीने ते प्रभु भक्तिरागे. १
मूळ परमपद कारण, सम्यक्‌दर्शन ज्ञानचरण पूर्ण;
प्रणमे एक स्वभावे, शुद्ध समाधि त्यां परिपूर्ण. २
जे चेतन जड भावो, अवलोक्या छे मुनींद्र सर्वज्ञे;
तेवी अंतर आस्था, प्रगट्ये दर्शन कह्युं छे तत्त्वज्ञे. ३

१९

पंथ परमपद

१. परम वीतराग, संपूर्ण रागद्वेषादि दोषोनो क्षय थयो छे जेनो एवा सर्वज्ञ भगवाने परम पदनो, मोक्षनो पंथ, मार्ग जे प्रमाणे उपदेश्यो छे ते प्रमाणे ते सर्वोपरी उपदेशने अनुसरीने, ते प्रभुने परम भक्तिभावे प्रणाम करीने, ते मार्ग अहीं कहीशुं के जेथी संसारतापथी तपेला भव्यो तेनो आश्रय करी मोक्षसुखने पामी, संसार दुःखथी मुक्त थाय. १

२. मोक्षरूप परमपदनां मूळ कारण सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान अने सम्यक्चारित्र ए त्रणेय एक अभेद आत्मस्वभावरूपे पूर्णपणे परिणमे त्यारे त्यां परिपूर्ण शुद्ध सहज आत्मस्वरूप समाधि प्राप्त थाय. २

३. मोक्षनां मूळ कारणमां सौथी प्रथम सम्यग्दर्शन कह्युं छे

विषयारंभनिवृत्ति, रागद्वेषनो अभाव ज्यां थाय;
सहित सम्यग्दर्शन, शुद्ध चरण त्यां समाधि सदुपाय. ५

त्रणे अभिन्न स्वभावे, परिणमी आत्मस्वरूप ज्यां थाय;
पूर्ण परमपद प्राप्ति, निश्चयथी त्यां अनन्य सुखदाय. ६

नय (Points of view) छे, तेने अनुसरीने द्रव्यगुण पर्यायने न जाणवा ते विमोह दोष छे. ४

५. यथार्थ पदार्थदर्शन के आत्मदर्शनरूप सम्यग्दर्शन सहित पांच इन्द्रियोना विषयोनो संयम थाय, आरंभ परिग्रहनो त्याग थाय, अने रागद्वेषनो अभाव थाय त्यां शुद्ध स्वरूपमां रमणतारूप चारित्र प्रगटे. आ चारित्ररूप आत्मस्थिरता सतत वर्धमान थाय त्यां ध्याता, ध्यान अने ध्येयनी एकतारूप समाधि प्राप्त थाय. तेथी आ आत्मपरिणामनी अखंड स्वस्थतारूप परम समाधिनो सदुपाय, सर्वश्रेष्ठ उपाय शुद्ध चारित्रने कह्यो छे. ५

६. आ त्रणेय सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्ररूप रत्नत्रय परिणाम अभिन्नपणे एक आत्मापणे परिणमी आत्मारूप ज्यारे थाय त्यारे निश्चये पूर्ण परम पदरूप मोक्षनी प्राप्ति थाय; के जे पद अनन्य सर्वोत्कृष्ट स्वाधीन आत्मिक सुखथी परिपूर्ण कहेवाय छे. अर्थात् रत्नत्रयनी ऐक्यतारूप निरंतर परिणाम एज अनंत सुखमय मोक्षनी प्राप्तिनुं अनन्य कारण थाय छे. ६

२०

[२९७/२६६] **जड चेतन विवेक** राळज, भाद्रपद सुद ८, १९४७

१ जडभावे जड परिणमे, चेतन चेतन भाव;
कोई कोई पलटे नहीं, छोडी आप स्वभाव. १

जड ते जड त्रण काळमां, चेतन चेतन तेम;
प्रगट अनुभवरूप छे, संशय तेमां केम? २

२०

जड चेतन विवेक

१. जड सदाय जडपणे परिणमे अने चेतन सदाय चेतनपणे परिणमे पण पोतपोतानो स्वभाव छोडीने कोई अन्यरूपे कदापि परिणमे नहीं. अर्थात् जड कदी चेतनपणे परिणमे नहि के चेतन कदी जडपणे परिणमे नहि. १

२. जड छे ते त्रणे काळे जडस्वरूपे ज रहे छे अने चेतन छे ते त्रणेय काळमां चेतनस्वरूपे ज रहे छे. ए वात प्रगट अनुभवरूप छे. तेथी तेमां कदापि संशय थवा योग्य नथी. जडनी गमे तेटली अवस्थाओ पलटाय पण ते सर्व जडरूपे ज रहे छे अने चेतननी पण गमे तेटली अवस्थाओ बदलाय पण ते सर्व चेतनरूपे ज रहे छे. जडनी कोई पण अवस्था कदी पण चेतनरूप थाय के चेतननी कोई अवस्था कदी पण जडरूप थाय एम कदापि बनवा योग्य ज नथी, एम निःसंदेह छे. २

वर्ते बंध प्रसंगमां, ते निज पद अज्ञान;
पण जडता नहि आत्मने, ए सिद्धांत प्रमाण. ५

ग्रहे अरूपी रूपीने, ए अचरजनी वात;
जीव बंधन जाणे नहीं, केवो जिन सिद्धांत? ६

बन्ने पोताना स्वभावयुक्त ज रहे छे. एम जिनभगवाननो सिद्धांत छे. ४

५. जीव बंधप्रसंगमां वर्ते छे अर्थात् कर्मबंध अवस्थामां रहे छे तेनुं कारण पोताना मूळ स्वरूपने पोते भूली गयारूप अज्ञान छे. पण तेथी करीने कंई आत्माने जडता, जडपणुं प्राप्त थयुं नथी. अर्थात् चेतन कदी जड थई गयो नथी. ए सिद्धांत प्रमाण, न्याययुक्त छे. ५

६. आकाशादि बीजां अरूपी द्रव्यो, जड परमाणुथी लेपातां नथी, परंतु आश्चर्यनी वात ए छे के वस्तुस्वभाव एवो छे के अरूपी एवो जीव अरूपी एवां जडपरमाणुने कर्मरूपे ग्रहण करे छे अने तेनी साथे संयोगसंबंधे बंधाय छे. आम छतां जीव पोते आवी रीते जड परमाणुरूप कर्मोथी बंधाई रह्यो छे एम पोताना बंधनने पोते जाणतो नथी. ए जिन भगवाननो केवो गहन, सूक्ष्म, अगम्य सिद्धांत छे! अर्थात् संपूर्ण ज्ञानवंत एवा केवळज्ञानभास्कर सर्वज्ञ भगवाने ज पोताना दिव्य ज्ञानप्रकाशथी आ सिद्धांत जाण्यो अने उपदेश्यो; बीजे अन्य दर्शनोमां तथारूप ज्ञानना अभावे कर्मबंध केम थाय छे? अने तेथी केम छुटाय? इत्यादि कर्मनी बंधमोक्षव्यवस्था प्रतिपादित करी नथी.

२ परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परम ज्ञान सुख धाम;
जेणे आप्युं भान निज, तेने सदा प्रणाम. १

---

११. धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारेय पुरुषार्थमां सर्वोपरी एवा धर्म अने मोक्ष पुरुषार्थमां निरंतर प्रवर्तता एवा,—सत्पुरुषार्थ-युक्त ते पुरुष,—सर्वोत्कृष्ट आत्मदशामां रमण करता परम पुरुष सद्-गुरु भगवान, जे पोते परमज्ञान अने सुखनुं धामरूप बनी, आ पामरने पोताना स्वरूपनुं भान करावावा परम उपकारशील बन्या, ते कारुण्य-मूर्ति सद्गुरु प्रभुने परम भक्तिथी त्रिकाळ अभिवंदन हो ! प्रणाम हो !! ११

देह जीव एकरूपे भासे छे अज्ञान वडे,
क्रियानी प्रवृत्ति पण तेथी तेम थाय छे;
जीवनी उत्पत्ति अने रोग, शोक, दुःख, मृत्यु,
देहनो स्वभाव जीव पदमां जणाय छे;

आम देहात्मबुद्धिरूप दर्शनमोह ए मुख्य अंतरंग परिग्रहग्रन्थि, गांठ, बंधन छेदावाथी, ते ज्ञानी पुरुष अन्य बाह्य अने अंतरंग सर्व परिग्रहरूप ग्रंथिने छेदवा समर्थ बने छे. अर्थात् दर्शनमोह अने चारित्रमोहरूप महान ग्रंथिनो छेद करीने ते महापुरुष निर्ग्रंथ, मोह ग्रंथिरहित, वीतराग सर्वज्ञ पदे विराजित बने छे. अने ए ज मोह-ग्रंथिने छेदवानो जे उपाय, मार्ग आ निर्ग्रंथ महात्माओ दर्शावे छे ते ज संसारना अंतनो अर्थात् मोक्षनो प्राप्तिनो साचो उपाय छे. १

२. बाह्यदृष्टि जीवोने शरीर अने आत्मा बन्ने एकरूपे भासे छे तेनुं कारण अज्ञान छे. पोताना आत्माना स्वभावनुं अने जड एवा शरीरना स्वभावनुं ज्ञान नथी, तेथी ज, अनादिथी शरीर अने आत्मा एकरूप मानवारूप भूल चाली आवे छे. अने तेथी क्रियानी प्रवृत्ति पण तेवी ज भ्रांति सहित थाय छे. देहनी सारसंभाळ इत्यादिना जाणे आत्मानी सारसंभाळ थाय छे एम मानी देहनी पाछळ ज जीव सर्व काळ एळे गुमावी दे छे. जीव तो सदाय शाश्वत होवाथी अनुत्पन्न छे. परंतु ते देहमां आवे छे त्यारे देहनी उत्पत्ति थई तेने जीवनी उत्पत्ति माने छे. तेमज देहमां रोग, शोक, मृत्यु आदि थाय छे ते देहनो स्वभाव छतां अज्ञानवशे ते आत्मानो स्वभाव माने छे. आवो

> सर्व संबंधनुं बंधन तीक्ष्ण छेदीने,
> विचरशुं कव महत्पुरुषने पंथ जो ? अपूर्व० १

कर्ममळने दूर करी, सर्व पाप ताप अने संतापने निवारी, अनंत आत्मिक सुखशांतिथी शीतळ एवा शुद्ध सहज आत्मस्वरूपरूप निज परमात्मपद प्राप्त कराववा अनन्य उपकारी थाय एवी प्रभावशाळी, विशुद्ध अंतरपरिणतिरूप सर्वोत्कृष्ट परम पद प्राप्तिनी भावना, ए महाज्ञानी श्रीमद् राजचन्द्रना अत्युत्तम अविरत अंतरंग अप्रमत्त पुरुषार्थ प्रवाहनुं अद्भुत अलौकिक अनुपम दिग्दर्शन करावे छे. अहो ! ते भाव निर्ग्रंथ महापुरुषनो अस्खलित अंतरंग पुरुषार्थ-प्रवाह ! अहो ! ते अंतरंग अद्भुत विदेही जीवन्मुक्त दशा ! अहो ! अहो !! वारंवार अहो !!!

१. अपूर्व अवसर एटले पूर्वे क्यारेय प्राप्त नहि थयेलो एवो महाभाग्यरूप निर्ग्रंथ दशानो उदय. 'अनादि काळना परिभ्रमणमां अनंतवार शास्त्रश्रवण, अनंतवार विद्याभ्यास, अनंतवार जिनदीक्षा, अनंतवार आचार्यपणुं प्राप्त थयुं छे. मात्र सत् मळ्या नथी, सत् सुण्युं नथी, अने सत् श्रद्ध्युं नथी. ए मळ्ये, ए सुण्ये अने ए श्रद्ध्ये ज छूटवानी वार्तानो आत्माथी भणकार थशे.'

निर्ग्रंथता एटले बाह्य परिग्रहनो त्याग करवा [illegible] प्राप्त तो पूर्वे अनंतवार प्राप्त थई गई छे, ते नहि. अहीं जे निर्ग्रंथ दशानी भावना भावी छे ते यथातथ्य अंतरंग निर्ग्रंथता छे. जे पूर्वे [illegible] प्राप्त थयेल न हती [illegible] निर्ग्रंथता नहि [illegible] एवो अपूर्व अवसर क्यारे आवशे ? के ज्यारे पूर्वे कदी नहि प्राप्त थयेल

परम पद प्राप्तिनी भावना

क्रोध प्रत्ये तो वर्ते क्रोधस्वभावता,
मान प्रत्ये तो दीनपणानुं मान जो;
माया प्रत्ये माया साक्षी भावनी,
लोभ प्रत्ये नहीं लोभ समान जो. अपूर्व० ७

ज्ञातादृष्टा साक्षी रही समभावे, लोभरहित, निःस्पृह, निष्कामपणे विचरवुं, के जेथी विषयकषाय अने प्रमादनो जय करी परम निर्ग्रंथ-दशा प्राप्त थाय. ६

७. ते चार कषाय आत्माने अनंत दुःखरूप संसारवृद्धिनां कारण थाय छे अने स्फटिक समान शुद्ध निर्मळ आत्मदशाने मुख्य आवरण करनार महान शत्रु छे, एम दृढ निरधार थयो होवाथी, हवे तेनो जय करवा उद्युक्त थयेला आ प्रयोगवीर महात्मा तेनो केवी रीते पराजय करवो ते उपाय विचारे छे.

'क्रोध प्रत्ये तो वर्ते क्रोध स्वभावता' इत्यादिमां काव्य चमत्कृतिथी एम दर्शाव्युं के क्रोध प्रत्ये क्रोधस्वभावपणुं वर्ते एटले क्रोध करवो होय तो क्रोध प्रत्ये करवो, मान प्रत्ये दीनपणानुं मान होय, मान करवुं होय तो पोताना दीनपणानुं मान करवुं. माया प्रत्ये साक्षीभावनी माया करवी- माया करवी होय तो साक्षीभावरूप साक्षी-भावनी माया करवी. 'लोभ प्रत्ये नहीं लोभ समान जो.' लोभ करवो होय तो लोभ समान कशुं नहि. लोभनो लोभ करवो नहि.

[illegible]

जिन प्रवचन दुर्गम्यता, थाके अति मतिमान;
अवलंबन श्री सद्गुरु, सुगम अने सुखखाण. ४

कलंक टळी शकवा योग्य छे. अने पोतानुं परमात्मपद जिन भगवाननी माफक प्रगट व्यक्त प्रकाशित थवा योग्य छे एवो बोध थवा माटे भगवानना उपदेशनुं रहस्य जेमां सारी रीते गुंफित करवामां आव्युं छे एवां शास्त्रो, गणधरादि आचार्योए जगत जीवोने सुखकारक बोध थवा माटे प्रबोध्यां छे. ३

४. जिन भगवाननो उपदेश, सर्वोपरी शास्त्रबोध अगाध अने अविरत ज्ञानगंगारूप प्रवहतो होवाथी, तेमज तेनो आशय अत्यंत गहन होवाथी, ते सहेजे समजाय के अनुसराय तेम नथी, ते अत्यंत दुर्गम्य छे. महा मतिमानो, मेधावी विद्वानो पण भगवाननी वाणीनो पार पामवा, मथामथ करी थाकी जाय छतां पार पामे तेम नथी. नानी नौकाथी दुस्तर सागरनो पार पामवो जेम कठिन छे तेम छद्मस्थोने पोतानी अल्प मतिना आधारे भगवानना उपदेशनो आशय [illegible] करवो अति अति दुर्लभ छे. त्यारे ते भगवाननां शास्त्रो सरळताथी समजवा कोई उपाय छे? एवा प्रश्न सामे तेनुं समाधान [illegible] छे. [illegible]

नहि तृष्णा जीव्यातणी, मरण योग नहीं क्षोभ;
महापात्र ते मार्गना, परम योग जितलोभ. ११

उपस्मृति करवी, अने सत्‌ना चरणमां रहेवुं,' ए रूप आत्मानी उपासना ए ज सर्वोपरी कर्तव्य भास्युं छे, दृढ मनायुं छे, अने तेथी जगत्, जगतना भावो, सांसारिक प्रवृत्ति ए सर्व बंधननां कारण जाणी, ते सुखरूप नथी, एम दृढ थवाथी ते प्रत्ये त्याग, वैराग्य, उदासीनता, उपेक्षाभाव जागृत थयो छे, एवा आत्मार्थ सन्मुख महाभाग्य निरागी निर्ग्रंथ मोक्षार्थी जनो मध्य पात्र, मध्यम योग्यतावाळा जाणवा योग्य छे. १०

११. जेमणे जीवननी आशा, पर्यंत जिवाय तो सारुं एवी तृष्णानो त्याग कर्यो छे. तेम मरणनी प्राप्ति जेवा प्रसंगमां पण क्षोभ, गभराट, व्यग्रता के सळवळाटरूप असांति जेने टळी गई छे, अर्थात् परम शांतभावे समाधिमरणने भेटवा, मृत्युमहोत्सव माणवा जे सदाय तत्पर छे, तेवा महाभाग्य जीवो उत्कृष्ट पात्र, मोक्षप्राप्ति माटे सर्वश्रेष्ठ योग्यतावाळा जाणवा योग्य छे. ते महापुरुषो परम योगी, आत्मध्यानमां निरंतर मग्न रहेनारा, मन वचन कायाना योगने जीतनारा, [illegible]

ॐ

आत्म-सिद्धि*

नडियाद, आसो वद १
गुरु १९५२

[५२६/७१८]

जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुःख अनंत;
समजाव्युं ते पद नमुं, श्री सद्गुरु भगवंत. १

जे आत्मस्वरूप समज्या विना भूतकाळे हुं अनंत दुःख पाम्यो, ते पद जेणे समजाव्युं एटले भविष्यकाळे उत्पन्न थवा योग्य एवां अनंत दुःख पामत ते मूळ जेणे छेद्युं एवा श्री सद्गुरु भगवानने नमस्कार करुं छुं. १

वर्तमान आ काळमां, मोक्षमार्ग बहु लोप;
विचारवा आत्मार्थीने, भाख्यो अत्र अगोप्य. २

आ वर्तमानकाळमां मोक्षमार्ग घणो लोप थई गयो छे,

---

* आ 'आत्मसिद्धिशास्त्र'नी १४२ गाथा 'आत्मसिद्धि' [illegible] आसो वद १ गुरुवारे [illegible] सं. १९५२ना [illegible] आ गाथाओना [illegible] हती त्यारे रची हती. [illegible] परम मुमुक्षु श्री अंबालाल लालचंदे [illegible] (जुओ आंक [illegible]) [illegible] 'श्रीमद् राजचन्द्र'नी [illegible] [illegible]

जाय; जेथी संसारनो उच्छेद न थाय, मात्र त्यां ज अटकवुं थाय. अर्थात् ते आत्मज्ञानने पामे नहीं. एम क्रियाजडने साधन–क्रिया अने ते साधननुं जेथी सफळपणुं थाय छे एवा आत्मज्ञाननो उपदेश कर्यो अने शुष्कज्ञानीने त्याग–वैरागादि साधननो उपदेश करी वाचाज्ञानमां कल्याण नथी एम प्रेर्युं. (७)

> ज्यां ज्यां जे जे योग्य छे, तहां समजवुं तेह;
> त्यां त्यां ते ते आचरे, आत्मार्थी जन एह. ८

ज्यां ज्यां जे जे योग्य छे, त्यां त्यां ते ते समजे, अने त्यां त्यां ते ते आचरे ए आत्मार्थी पुरुषनां लक्षणो छे. ८

जे जे ठेकाणे जे जे योग्य छे एटले ज्यां त्यागवैराग्यादि योग्य होय त्यां त्यागवैराग्यादि समजे, ज्यां आत्मज्ञान योग्य होय त्यां आत्मज्ञान समजे, एम जे ज्यां जोईए ते त्यां समजवुं अने त्यां त्यां ते ते प्रमाणे प्रवर्तवुं, ए आत्मार्थी जीवनुं लक्षण छे. अर्थात् मतार्थी होय के मानार्थी होय ते योग्य मार्गने ग्रहण न करे. अथवा क्रियामां ज जेने दुराग्रह थयो छे, अथवा शुष्कज्ञानना ज अभिमानमां जेणे ज्ञानीपणुं मानी लीधुं छे, ते त्यागवैराग्यादि साधनने अथवा आत्मज्ञानने ग्रहण न करी शके.

जे आत्मार्थी होय ते [illegible]
[illegible]
[illegible]
छे ते ते आचरे, ते आत्मार्थी कहेवाय.

नथी, मात्र पोतानी मतिकल्पनाथी स्वच्छंदपणे अध्यात्मग्रंथो वांच्या छे, अथवा शुष्कज्ञानी समीपथी तेवा ग्रंथो के वचनो सांभळी लईने पोताने विषे ज्ञानीपणुं मान्युं छे, अने ज्ञानी गणावाना पदनुं एक प्रकारनुं मान छे तेमां तेने मीठाश रही छे, अने ए तेनो पक्ष थयो छे; अथवा कोई एक कारणविशेषथी शास्त्रोमां दया, दान अने हिंसा, पूजानुं समानपणुं कह्यु छे तेवां वचनोने तेनो परमार्थ समज्या विना हाथमां लईने मात्र पोताने ज्ञानी मानवा अर्थे, अने पामर जीवना तिरस्कारना अर्थे ते वचनोनो उपयोग करे छे, पण तेवां वचनो कया लक्षे समजवाथी परमार्थ थाय छे ते जाणतो नथी. वळी जेम दया-दानादिकनुं शास्त्रोमां निष्फळपणुं कह्युं छे तेम नवपूर्व गुधी भण्यो छतां ते पण अफळ गयुं एम ज्ञाननुं पण निष्फळपणुं कह्युं छे, तो ते शुष्कज्ञाननो ज निषेध छे. एम छतां तेनो लक्ष तेने थतो नथी, केमके ज्ञानी बनवाना माने तेनो आत्मा मूढताने पाम्यो छे, [illegible] विचारनो अवकाश रह्यो नथी. एम [illegible] [illegible] [illegible] मूक्या छे, अने ते परमार्थ पामवानी [illegible] परमार्थ पाम्या [illegible]

नथी, मात्र पोतानी मतिकल्पनाथी स्वच्छंदपणे अध्यात्मग्रंथो वांच्या छे, अथवा शुष्कज्ञानी समीपथी तेवा ग्रंथो के वचनो सांभळी लइने पोताने विषे ज्ञानीपणुं मान्युं छे, अने ज्ञानी गणाववाना पदनुं एक प्रकारनुं मान छे तेमां तेने मीठाश रही छे, अने ए तेनो पक्ष थयो छे; अथवा कोई एक कारणविशेषथी शास्त्रोमां दया, दान अने हिंसा, पूजानुं समानपणुं कह्युं छे तेवां वचनोने तेनो परमार्थ समज्या विना हाथमां लइने मात्र पोताने ज्ञानी मानवा अर्थे, अने पामर जीवना तिरस्कारना अर्थे ते वचनोनो उपयोग करे छे, पण तेवां वचनो कया [illegible] समजवाथी परमार्थ थाय छे ते जाणतो नथी. वळी जेम [illegible] दानादिकनुं शास्त्रोमां निष्फळपणुं कह्युं छे तेम [illegible] हतां ते पण अफळ थयुं एम ज्ञाननुं पण निष्फळपणुं कह्युं छे, तो [illegible] शुष्कज्ञाननो ज निषेध छे. एम हतां तेनो [illegible] [illegible] ज्ञानी कहेवाना माने तेनो आत्मा मूढताने पाम्यो छे, [illegible] विचारनो अवकाश रह्यो नथी. [illegible] [illegible] [illegible] परमार्थ पामवानो [illegible] परमार्थ पाम्या [illegible] [illegible]

થાય છે કે અસદ્ગુરુથી તરાશે એમાં કશો સંદેહ નથી.

અને અશોચ્યા કેવળી જેમણે પૂર્વે કોઈ પાસેથી ધર્મ સાંભળ્યો નથી તેને કોઈ તથારૂપ આવરણના ક્ષયથી જ્ઞાન ઉત્પન્ન થયું છે, એમ શાસ્ત્રમાં નિરૂપણ કર્યું છે, તે આત્માનું માહાત્મ્ય દર્શાવવા, અને જેને સદ્ગુરુયોગ ન હોય તેને જાગ્રત કરવા, તે તે અનેકાંતમાર્ગ નિરૂપણ કરવા દર્શાવ્યું છે; પણ સદ્ગુરુઆજ્ઞાએ પ્રવર્તવાનો માર્ગ ઉપેક્ષિત કરવા દર્શાવ્યું નથી. વળી એમ સ્વચ્છંદે તો ઊલટું તે માર્ગ ઉપર દોષ આવવા વિચાર સબળ કર્યું છે. અને કહ્યું છે કે તે અશોચ્યા કેવળી...... અર્થાત્ અશોચ્યા કેવળીનો આ પ્રસંગ સાંભળીને કોઈએ જે આજ્ઞા-માર્ગ ચાલ્યો આવે છે, તેના નિષેધ પ્રત્યે જવું એવો આશય નથી, એમ નિવેદન થયું છે.

કોઈ જીવ આત્માર્થે એવો કદાગ્રહ સદ્ગુરુનો યોગ ન થયો હોય, અને તેની તેને ભાવનામાં ને ભાવનામાં જ નિશ્ચયપણાની પકડ [illegible], અથવા તેના આત્માર્થને લીધે નિશ્ચયપણાની પકડ [illegible], આત્મજ્ઞાન થયું હોય તો તે સદ્ગુરુમાર્ગની ઉપેક્ષા [illegible], અને સદ્ગુરુથી પોતાને જ્ઞાન થયું નથી માટે મોટો છું એવો [illegible], [illegible] થયું હોય; એમ વિચારી વિચારવાને [illegible] [illegible] તેનું વચન પ્રકાશ્યું છે.

[illegible]

[illegible]

मुक्तदशा थवाथी आत्मस्वभावआविर्भावपणुं छे, अने स्वरूपस्थिति छे; पांचमे गुणस्थानके देशे करीने चारित्रघातक कषायो रोकावाथी आत्म-स्वभावनुं चोथा करतां विशेष आविर्भावपणुं छे, अने छट्ठामां कषायो विशेष रोकावाथी सर्व चारित्रनुं उदयपणुं छे, तेथी आत्मस्वभावनुं विशेष आविर्भावपणुं छे. मात्र छट्ठे गुणस्थानके पूर्वनिबंधित कर्मना उद-यथी प्रमत्तदशा क्वचित् वर्ते छे तेने लईने 'प्रमत्त' सर्व चारित्र कहेवाय, पण तेथी स्वरूपस्थितिमां विरोध नथी, केमके आत्मस्वभावनुं बाहुल्यताथी आविर्भावपणुं छे. वळी आगम पण एम कहे छे के, चोथे गुणस्थानकथी तेरमा गुणस्थानक सुधी आत्मप्रतीति समान छे, ज्ञाननो तारतम्यभेद छे.

जो चोथे गुणस्थानके स्वरूपस्थिति अंशेपण न होय, तो मिथ्या-त्व जवानुं फळ शुं थयुं? कांई ज थयुं नहीं. जे मिथ्यात्व गयुं ते [illegible] आत्मस्वभावनुं आविर्भावपणुं छे, अने ते ज स्वरूपस्थिति [illegible] सम्यक्त्वथी तथारूप स्वरूपस्थिति न होत, तो श्रेणिकादिने [illegible] [illegible]

एवो विनयनो मार्ग श्री जिने उपदेश्यो छे. ए मार्गनो मूळ हेतु एटले तेथी आत्माने शो उपकार थाय छे. ते कोईक सुभाग्य एटले सुलभबोधि अथवा आराधक जीव होय ते समजे. २०

असद्गुरु ए विनयनो, लाभ लहे जो कांई;
महामोहनीय कर्मथी, बूडे भवजळ मांही. २१

आ विनयमार्ग कह्यो तेनो लाभ एटले ते शिष्यादिनी पासे करावबानी इच्छा करीने जो कोई पण असद्गुरु पोताने विषे सद्गुरुपणुं स्थापे तो ते महामोहनीय कर्म उपार्जन करीने भव समुद्रमां बूडे. २१

होय मुमुक्षु जीव ते, समजे एह विचार;
होय मतार्थी जीव ते, अवळो ले निर्धार. २२

जे मोक्षार्थी जीव होय ते आ विनयमार्गादिनो विचार समजे, अने जे मतार्थी होय ते तेनो अवळो निर्धार करे [illegible] कां पोते तेवो विनय शिष्यादि पासे करावे, [illegible] विषे पोते सद्गुरुनी भ्रांति राखी आ विनयमार्गनो [illegible] २२

होय मतार्थी तेहने, थाय न आतमलक्ष;
तेह मतार्थी लक्षणो, अहीं कह्यां निर्पक्ष. २३

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
अथवा निजकुळधर्मना, ते गुरुमां ज ममत्व. २४

देहाध्यासथी एटले अनादिकाळथी अज्ञानने लीधे देहनो परिचय छे, तेथी आत्मा देह जेवो अर्थात् तने देह भास्यो छे, पण आत्मा अने देह बन्ने जुदां छे, केमके बेय जुदां जुदां लक्षणथी प्रगट भानमां आवे छे. ४९

भास्यो देहाध्यासथी, आत्मा देह समान;
पण ते बन्ने भिन्न छे, जेम असि ने म्यान. ५०

अनादिकाळथी अज्ञानने लीधे देहना परिचयथी देह ज आत्मा भास्यो छे, अथवा देह जेवो आत्मा भास्यो छे; पण जेम तरवार ने म्यान, म्यानरूप लागतां छतां बन्ने जुदां जुदां छे, तेम आत्मा अने देह बन्ने जुदा जुदा छे. ५०

जे द्रष्टा छे दृष्टिनो, जे जाणे छे रूप;
अबाध्य अनुभव जे रहे, ते छे जीवस्वरूप. ५१

ते आत्मा दृष्टि एटले आंखथी क्यांथी देखाय? केमके ऊलटो तेनो ते जोनार छे. स्थूळसूक्ष्मादि रूपने जे जाणे छे, अने सर्वने बाध करतां करतां कोई पण प्रकारे जेनो बाध करी शकातो नथी एवो बाकी जे अनुभव रहे छे ते जीवनुं स्वरूप छे. ५१

[1]छे इन्द्रिय प्रत्येकने, निज निज विषयनुं ज्ञान;
पांच इन्द्रीना विषयनुं, पण आत्माने भान. ५२

[1]कर्णेन्द्रियथी सांभळ्युं ते ते कर्णेन्द्रिय जाणे छे, पण चक्षु-इन्द्रिय तेने जाणती नथी, अने चक्षु-इन्द्रिये दीठेलुं ते कर्णेन्द्रिय जाणती नथी. अर्थात् सौ सौ इन्द्रियने पोतपोताना विषयनुं ज्ञान छे, पण बीजो

---

१ पाठांतरः—कान न जाणे आंखने, आंख न जाणे कान;

मानतो नथी; ए ज्ञान ते केवुं कहेवुं? ५५

परम बुद्धि कृश देहमां, स्थूळ देह मति अल्प;
देह होय जो आत्मा, घटे न आम विकल्प. ५६

दुर्बळ देहने विषे परम बुद्धि जोवामां आवे छे, अने स्थूळ देहने विषे थोडी बुद्धि पण जोवामां आवे छे; जो देह ज आत्मा होय तो एवो विकल्प एटले विरोध थवानो वखत न आवे. ५६

जड चेतननो भिन्न छे, केवळ प्रगट स्वभाव;
एकपणुं पामे नहीं, त्रणे काळ द्वयभाव. ५७

कोई काळे जेमां जाणवानो स्वभाव नथी ते जड, अने सदाय जे जाणवाना स्वभाववान छे ते चेतन, एवो बेयनो केवळ जुदो स्वभाव छे, अने ते कोई पण प्रकारे एकपणुं पामवा योग्य नथी. त्रणे काळ जड जडभावे, अने चेतन चेतनभावे रहे एवो बेयनो जुदो जुदो द्वैतभाव प्रसिद्ध ज अनुभवाय छे. ५७

आत्मानी शंका करे, आत्मा पोते आप;
शंकानो करनार ते, अचरज एह अमाप. ५८

आत्मानी शंका आत्मा आपे पोते करे छे. जे शंकानो करनार छे, ते ज आत्मा छे. ते जणातो नथी, ए माप न थई शके एवुं आश्चर्य छे. ५८.

शंका—शिष्य उवाच

[आत्मा नित्य नथी एम शिष्य कहे छे:—]

आत्माना अस्तित्वना, आपे कह्या प्रकार;
संभव तेनो थाय छे, अंतर कर्ये विचार. ५९

तेथी तेमांथी चेतननी उत्पत्ति थवा योग्य नथी, अने उत्पत्ति थवा योग्य नथी तेथी चेतन तेमां नाश पामवायोग्य नथी. वळी ते देह रूपी एटले स्थूळादि परिणामवाळो छे, अने चेतन द्रष्टा छे, त्यारे तेना संयोगथी चेतननी उत्पत्ति शी रीते थाय? अने तेमां लय पण केम थाय? देहमांथी चेतन उत्पन्न थाय छे अने तेमां ज नाश पामे छे, ए वात कोना अनुभवने वश रही? अर्थात् एम केणे जाण्युं? केमके जाणनार एवा चेतननी उत्पत्ति देहथी प्रथम छे नहीं, अने नाश तो तेथी पहेलां छे, त्यारे ए अनुभव थयो कोने? ६२

जीवनुं स्वरूप अविनाशी एटले नित्य त्रिकाळ रहेवावाळुं संभवतुं नथी; देहना योगथी एटले देहना जन्म साथे ते जन्मे छे अने देहना वियोगे एटले देहना नाशथी ते नाश पामे छे. ए आशंकानुं समाधान आ प्रमाणे विचारशोः—

देह छे ते जीवने मात्र संयोग संबंधे छे, पण जीवनुं मूळ स्वरूप उत्पन्न थवानुं कंई ते कारण नथी. अथवा देह छे ते मात्र संयोगथी उत्पन्न थयेलो एवो पदार्थ छे. वळी ते जड छे एटले कोईने जाणतो नथी; पोताने ते जाणतो नथी, तो बीजाने शुं जाणे? वळी देह रूपी छे; स्थूळादि स्वभाववाळो छे अने चक्षुनो विषय छे. ए प्रकारे देहनुं स्वरूप छे, तो ते चेतनमां उत्पत्ति अने लयने शी रीते जाणे? अर्थात् पोताने ते जाणतो नथी तो 'माराथी आ चेतन उत्पन्न थयुं छे, एम शी रीते जाणे? अने 'मारा छूटी जवा पछी आ चेतन छूटी जशे अर्थात् नाश पामशे' एम जड एवो देह

ते तेथी जुदो ज होय. केमके ते उत्पत्तिलयरूप न ठर्यो, पण तेनो जाणनार ठर्यो. माटे ते बेनी एकता केम थाय? (६३)

जे संयोगो देखिये, ते ते अनुभव दृश्य;
ऊपजे नहि संयोगथी, आत्मा नित्य प्रत्यक्ष. ६४

जे जे संयोगो देखीए छीए ते ते अनुभवस्वरूप एवा आत्माना दृश्य एटले तेने आत्मा जाणे छे, अने ते संयोगनुं स्वरूप विचारतां एवो कोई पण संयोग समजातो नथी के जेथी आत्मा उत्पन्न थाय छे, माटे आत्मा संयोगथी नहीं उत्पन्न थयेलो एवो छे; अर्थात् असंयोगी छे, स्वाभाविक पदार्थ छे, माटे ते प्रत्यक्ष 'नित्य' समजाय छे. ६४

जे जे देहादि संयोगो देखाय छे ते ते अनुभवस्वरूप एवा आत्माना दृश्य छे, अर्थात् आत्मा तेने जुए छे अने जाणे छे, एवा पदार्थ छे. ते बधा संयोगोनो विचार करी जुओ तो कोई पण संयोगोथी अनुभवस्वरूप एवो आत्मा उत्पन्न थई शकवा योग्य तमने जणाशे नहीं. कोई पण संयोगो तमने जाणता नथी अने तमे ते सर्व संयोगोने जाणो छो ए ज तमारुं तेथी जुदापणुं अने असंयोगीपणुं एटले ते संयोगोथी उत्पन्न नहीं थवापणुं सहजे सिद्ध थाय छे, अने अनुभवमां आवे छे. तेथी एटले कोई पण संयोगोथी जेनी उत्पत्ति थई शकती नथी, कोई पण संयोगो जेनी उत्पत्ति माटे अनुभवमां आवी शकता नथी, जे जे संयोगो कल्पीए तेथी ते अनुभव न्यारो ने न्यारो ज मात्र तेने जाणनाररूपे ज रहे छे, ते अनुभवस्वरूप

साथे ज ते छे; एटले ए पूर्वजन्मनो ज संस्कार छे, पूर्वजन्म जीवनी नित्यता सिद्ध करे छे. ६७

सर्पमां जन्मथी क्रोधनुं विशेषपणुं जोवामां आवे छे, पारेवाने विषे जन्मथी ज निर्हिंसकपणुं जोवामां आवे छे, मांकड आदि जंतुओने पकडतां तेने पकडवाथी दुःख थाय छे एवी भयसंज्ञा प्रथमथी तेना अनुभवमां रही छे, तेथी ते नासी जवानो प्रयत्न करे छे; कंईक प्राणीमां जन्मथी प्रीतिनुं, कंईकमां समतानुं, कंईकमां विशेष निर्भयतानुं, कंईकमां गंभीरतानुं, कंईकमां विशेष भयसंज्ञानुं, कंईकमां कामादि प्रत्ये असंगतानुं, अने कंईकने आहारादि विषे अधिक अधिक लुब्धपणानुं विशेषपणुं जोवामां आवे छे; ए आदि भेद एटले क्रोधादि संज्ञाना न्यूनाधिकपणा आदिथी तेम ज ते ते प्रकृतिओ जन्मथी सहचारीपणे रही जोवामां आवे छे तेथी तेनुं कारण पूर्वना संस्कारो ज संभवे छे.

कदापि एम कहीए के गर्भमां वीर्य–रेतना गुणना योगथी ते ते प्रकारना गुणो उत्पन्न थाय छे, पण तेमां पूर्वजन्म कंई कारणभूत नथी; ए कहेवुं पण यथार्थ नथी. जे मावापो कामने विशे विशेष प्रीतिवाळां जोवामां आवे छे, तेना पुत्रो परम वीतराग जेवा बाळपणाथी ज जोवामां आवे छे, वळी जे मावापोमां क्रोधनुं विशेषपणुं जोवामां आवे छे, तेनी संततिमां समतानुं विशेषपणुं दृष्टिगोचर थाय छे, ते शी रीते थाय? वळी ते वीर्य–रेतना तेवा गुणो संभवता नथी, केमके ते वीर्य–रेत पोते चेतन नथी, तेमां चेतन संचरे छे, एटले देह धारण करे छे; एथी करीने वीर्य–रेतने आश्रये क्रोधादि भाव गणी

अवस्थाने जाणे छे, अने ते त्रणे अवस्थानी तेने ज स्मृति छे. त्रणे अवस्थामां आत्मा एक होय तो एम बने पण जो आत्मा क्षणे क्षणे बदलातो होय तो तेवो अनुभव बने ज नहीं. ६८

अथवा ज्ञान क्षणिकनुं, जे जाणी वदनार;
वदनारो ते क्षणिक नहि, कर अनुभव निर्धार. ६९

वळी अमुक पदार्थ क्षणिक छे एम जे जाणे छे, अने क्षणिकपणुं कहे छे ते कहेनार अर्थात् जाणनार क्षणिक होय नहीं; केमके प्रथम क्षणे अनुभव थयो तेने बीजे क्षणे ते अनुभव कही शकाय, ते बीजे क्षणे पोते न होय तो क्यांथी कहे? माटे ए अनुभवथी पण आत्माना अक्षणिकपणानो निश्चय कर. ६९

क्यारे कोई वस्तुनो, केवळ होय न नाश;
चेतन पामे नाश तो, केमां भळे तपास. ७०

वळी कोई पण वस्तुनो, कोई पण काळे केवळ तो नाश थाय ज नहीं; मात्र अवस्थांतर थाय, माटे चेतननो पण केवळ नाश थाय नहीं. अने अवस्थांतररूप नाश थतो होय तो ते केमां भळे, अथवा केवा प्रकारनुं अवस्थांतर पामे ते तपास. अर्थात् घटादि पदार्थ फूटी जाय छे, एटले लोको एम कहे छे के घडो नाश पाम्यो छे, कंई माटीपणुं नाश पाम्युं नथी. ते छिन्नभिन्न थई जई सूक्ष्ममां सूक्ष्म भूको थाय, तो पण परमाणु समूहरूपे रहे, पण केवळ नाश न थाय; अने तेमांनुं एक परमाणु पण घटे नहीं, केमके अनुभवथी जोतां अवस्थांतर थई शके, पण पदार्थनो समूळगो नाश थाय एम भासी ज शकवा

माटे मोक्ष उपायनो, कोई न हेतु जणाय;
कर्मतणुं कर्तापणुं, कां नहि, कां नहि जाय. ७३

माटे जीव कोई रीते कर्मनो कर्ता थई शकतो नथी, अने मोक्षनो उपाय करवानो कोई हेतु जणातो नथी; कां जीवने कर्मनुं कर्तापणुं नथी अने जो कर्तापणुं होय तो कोई रीते ते तेनो स्वभाव मटवा योग्य नथी. ७३

समाधान—सद्गुरु उवाच

[कर्मनुं कर्त्तापणुं आत्माने जे प्रकारे छे ते प्रकारे सद्गुरु समाधान करे छे:]

होय न चेतन प्रेरणा, कोण ग्रहे तो कर्म?
जडस्वभाव नहि प्रेरणा, जुओ विचारी धर्म.[1] ७४

चेतन एटले आत्मानी प्रेरणारूप प्रवृत्ति न होय, तो कर्मने कोण ग्रहण करे? जडनो स्वभाव प्रेरणा नथी. जड अने चेतन बेयना धर्म विचारी जुओ. ७४

जो चेतननी प्रेरणा न होय, तो कर्म कोण ग्रहण करे? प्रेरणा-पणे ग्रहण कराववारूप स्वभाव जडनो छे ज नहीं; अने एम होय तो घटपटादि पण क्रोधादि भावमां परिणमवा जोईए अने कर्मना ग्रहणकर्ता होवा जोईए, पण तेवो अनुभव तो कोईने क्यारे पण थतो नथी, जेथी चेतन एटले जीव कर्म ग्रहण करे छे, एम सिद्ध थाय छे, अने ते माटे कर्मनो कर्ता कहीए छीए. अर्थात् एम जीव कर्मनो कर्ता छे.

'कर्मना कर्ता कर्म कहेवाय के केम?' तेनुं पण समाधान आथी थशे के जड कर्ममां प्रेरणारूप धर्म नहीं होवाथी ते ते रीते

१. पाठांतरः—जुओ विचारी मर्म.

कोई पण प्रकारे तेनुं भोक्तृत्वपणुं पण न ठरे, अने ज्यारे एम ज होय तो पछी तेनां कोई पण प्रकारनां दुःखोनो संभव पण न ज थाय. ज्यारे कोई पण प्रकारनां दुःखोनो संभव आत्माने न ज थतो होय तो पछी वेदांतादि शास्त्रो सर्व दुःखथी क्षय थवानो जे मार्ग उपदेशे छे ते शा माटे उपदेशे छे? 'ज्यां सुधी आत्मज्ञान थाय नहीं, त्यां सुधी दुःखनी आत्यंतिक निवृत्ति थाय नहीं,' एम वेदांतादि कहे छे; ते जो दुःख न ज होय तो तेनी निवृत्तिनो उपाय शा माटे कहेवो जोईए? अने कर्तृत्वपणुं न होय, तो दुःखनुं भोक्तृत्वपणुं क्यांथी होय? एम विचार करवाथी कर्मनुं कर्तृत्व ठरे छे.

हवे अत्रे एक प्रश्न थवा योग्य छे अने तमे पण ते प्रश्न कर्यो छे के, 'जो कर्मनुं कर्तापणुं आत्माने मानीए, तो तो आत्मानो ते धर्म ठरे, अने जे जेनो धर्म होय ते क्यारे पण उच्छेद थवा योग्य नथी; अर्थात् तेनाथी केवळ भिन्न पडी शकवा योग्य नथी, जेम अग्निनी उष्णता अथवा प्रकाश तेम.' एम ज जो कर्मनुं कर्तापणुं आत्मानो धर्म ठरे, तो ते नाश पामे नहीं.

उत्तरः—सर्व प्रमाणांशना स्वीकार्या विना एम ठरे; पण विचारवान होय ते कोई एक प्रमाणांश स्वीकारीने बीजा प्रमाणांशनो नाश न करे. 'ते जीवने कर्मनुं कर्तापणुं न होय' अथवा 'होय तो ते प्रतीत थवा योग्य नथी.' ए आदि प्रश्न कर्याना उत्तरमां जीवनुं कर्मनुं कर्तृत्व जणाव्युं छे. कर्मनुं कर्तृत्व होय तो ते टळे ज नहीं, एम कांई सिद्धांत समजवो योग्य नथी; केमके जे जे कोई पण वस्तु

शुभाशुभ कर्म, आ जीवने आ फळ आपवुं छे एम जाणतां नथी, तोपण ग्रहण करनार जीव, झेर अमृतना परिणामनी रीते फळ पामे छे. ८३

झेर अने अमृत पोते एम समजतां नथी के अमने खानारने मृत्यु, दीर्घायुपता थाय छे, पण स्वभावे तेने ग्रहण करनार प्रत्ये जेम तेनुं परिणमवुं थाय छे, तेम जीवमां शुभाशुभ कर्म पण परिणमे छे, अने फळ सन्मुख थाय छे; एम जीवने कर्मनुं भोक्तापणुं समजाय छे. (८३)

एक रांक ने एक नृप, ए आदि जे भेद;
कारण विना न कार्य ते, ते ज शुभाशुभ वेद्य. ८४

एक रांक छे अने एक राजा छे, ए आदि शब्दथी नीचपणुं, ऊंचपणुं, कुरूपपणुं, सुरूपपणुं एम घणुं विचित्रपणुं छे, अने एवो जे भेद रहे छे ते, सर्वने समानता नथी, ते ज शुभाशुभ कर्मनुं भोक्तापणुं छे, एम सिद्ध करे छे; केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी. ८४

ते शुभाशुभ कर्मनुं फळ न थतुं होय, तो एक रांक अने एक राजा ए आदि जे भेद छे, ते न थवा जोईए; केमके जीवपणुं समान छे, तथा मनुष्यपणुं समान छे, तो सर्वने सुख अथवा दुःख पण समान जोईए; जेने बदले आवुं विचित्रपणुं जणाय छे, ते ज शुभाशुभ कर्मथी उत्पन्न थयेलो भेद छे; केमके कारण विना कार्यनी उत्पत्ति थती नथी. एम शुभ अने अशुभ कर्म भोगवाय छे. (८४)

सूक्ष्मस्वरूपनो अत्रे घणो विचार समाय छे, माटे आ वात गहन छे, तोपण तेने साव संक्षेपमां कही छे. ८६

तेमज, ईश्वर जो कर्मफळदाता न होय अथवा जगतकर्ता न गणीए तो कर्म भोगववानां विशेष स्थानको एटले नरकादि गति आदि स्थान क्यांथी होय, केमके तेमां तो ईश्वरना कर्तृत्वनी जरूर छे, एवी आशंका पण करवा योग्य नथी; केमके मुख्यपणे तो उत्कृष्ट शुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट देवलोक छे, अने उत्कृष्ट अशुभ अध्यवसाय ते उत्कृष्ट नरक छे, शुभाशुभ अध्यवसाय ते मनुष्य तिर्यंचादि छे, अने स्थानविशेष एटले ऊर्ध्वलोके देवगति, ए आदि भेद छे. जीवसमूहनां कर्मद्रव्यनां पण ते परिणामविशेष छे एटले ते ते गतिओ जीवना कर्मविशेष परिणामादि संभवे छे.

आ वात घणी गहन छे; केमके अचिंत्य एवुं जीववीर्य, अचिंत्य एवुं पुद्गलसामर्थ्य एना संयोग विशेषथी लोक परिणमे छे. तेनो विचार करवा माटे घणो विस्तार कहेवो जोईए. पण अत्र तो मुख्य मुख्य करीने आत्मा कर्मनो भोक्ता छे एटलो लक्ष करावववानो होवाथी साव संक्षेपे आ प्रसंगे कह्यो छे. (८६)

शंका—शिष्य उवाच

[जीवनो ते कर्मथी मोक्ष नथी, एम शिष्य कहे छे:—]

कर्ता भोक्ता जीव हो, पण तेनो नहि मोक्ष;
वीत्यो काळ अनंत पण, वर्तमान छे दोष. ८७

कर्ता भोक्ता जीव हो, पण तेथी तेनो मोक्ष थवा योग्य

पांचे उत्तरनी तारा आत्माने विषे प्रतीति थई छे, तो मोक्षना उपायनी पण ए ज रीते तने सहजमां प्रतीति थशे. अत्रे 'थशे' अने 'सहज' ए वे शब्द सद्गुरुए कह्या छे ते जेने पांचे पदनी शंका निवृत्त थई छे तेने मोक्षोपाय समजावो कंई कठण ज नथी एम दर्शाववा. तथा शिष्यनुं विशेष जिज्ञासुपणुं जाणी अवश्य तेने मोक्षोपाय परिणमशे एम भासवाथी (ते वचन) कह्यां छे. एम सद्गुरुनां वचननो आशय छे. ९७

कर्मभाव अज्ञान छे, मोक्षभाव निजवास;
अंधकार अज्ञान सम, नाशे ज्ञानप्रकाश. ९८

कर्मभाव छे ते जीवनुं अज्ञान छे अने मोक्षभाव छे ते जीवना पोताना स्वरूपने विषे स्थिति थवी ते छे. अज्ञाननो स्वभाव अंधकार जेवो छे. तेथी जेम प्रकाश थतां घणा काळनो अंधकार छतां नाश पामे छे, तेम ज्ञान प्रकाश थतां अज्ञान पण नाश पामे छे. ९८

जे जे कारण बंधनां, तेह बंधनो पंथ;
ते कारण छेदक दशा, मोक्षपंथ भवअंत. ९९

जे जे कारणो कर्मबंधनां छे ते ते कर्मबंधनो मार्ग छे; अने ते ते कारणोने छेदे एवी जे दशा छे ते मोक्षनो मार्ग छे, भवनो अंत छे. ९९

राग, द्वेष अज्ञान ए, मुख्य कर्मनी ग्रंथ;
थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षनो पंथ. १००

राग, द्वेष अने अज्ञान एनुं एकत्व ए कर्मनी मुख्य गांठ छे; अर्थात् ए विना कर्मनो बंध न थाय; तेनी जेथी निवृत्ति थाय ते ज मोक्षनो मार्ग छे. १००

पांचे उत्तरनी तारा आत्माने विषे प्रतीति थई छे, तो मोक्षना उपायनी पण ए ज रीते तने सहजमां प्रतीति थशे. अत्रे 'थशे' अने 'सहज' ए बे शब्द सद्गुरुए कह्या छे ते जेने पांचे पदनी शंका निवृत्त थई छे तेने मोक्षोपाय समजावो कंई कठण ज नथी एम दर्शाववा. तथा शिष्यनुं विशेष जिज्ञासुपणुं जाणी अवश्य तेने मोक्षोपाय परिणमशे एम भासवाथी (ते वचन) कह्यां छे. एम सद्गुरुनां वचननो आशय छे. ९७

कर्मभाव अज्ञान छे, मोक्षभाव निजवास;
अंधकार अज्ञान सम, नाशे ज्ञानप्रकाश. ९८

कर्मभाव छे ते जीवनुं अज्ञान छे अने मोक्षभाव छे ते जीवना पोताना स्वरूपने विषे स्थिति थवी ते छे. अज्ञाननो स्वभाव अंधकार जेवो छे. तेथी जेम प्रकाश थतां घणा काळनो अंधकार छतां नाश पामे छे, तेम ज्ञान प्रकाश थतां अज्ञान पण नाश पामे छे. ९८

जे जे कारण बंधनां, तेह बंधनो पंथ;
ते कारण छेदक दशा, मोक्षपंथ भवअंत. ९९

जे जे कारणो कर्मबंधनां छे ते ते कर्मबंधनो मार्ग छे; अने ते ते कारणोने छेदे एवी जे दशा छे ते मोक्षनो मार्ग छे, भवनो अंत छे. ९९

राग, द्वेष अज्ञान ए, मुख्य कर्मनी ग्रंथ;
थाय निवृत्ति जेहथी, ते ज मोक्षनो पंथ. १००

राग, द्वेष अने अज्ञान एनुं एकत्व ए कर्मनी मुख्य गांठ छे; अर्थात् ए विना कर्मनो बंध न थाय; तेनी जेथी निवृत्ति थाय ते ज मोक्षनो मार्ग छे. १००

चारित्रमोहनीय रागादिक परिणामरूप छे, तेनो प्रतिपक्ष वीतरागभाव छे. एटले अंधकार जेम प्रकाश थवाथी नाश पामे छे,—ते तेनो अचूक उपाय छे,—तेम बोध अने वीतरागता दर्शनमोहनीय अने चारित्र-मोहनीयरूप अंधकार टाळवामां प्रकाशस्वरूप छे; माटे ते तेनो अचूक उपाय छे. १०३

कर्मबंध क्रोधादिथी, हणे क्षमादिक तेह;
प्रत्यक्ष अनुभव सर्वने, एमां शो संदेह? १०४

क्रोधादि भावथी कर्मबंध थाय छे, अने क्षमादिक भावथी ते हणाय छे, अर्थात् क्षमा राखवाथी क्रोध रोकी शकाय छे, सरळताथी माया रोकी शकाय छे, संतोषथी लोभ रोकी शकाय छे; एम रति, अरति आदिना प्रतिपक्षथी ते ते दोषो रोकी शकाय छे, ते ज कर्म-बंधनो निरोध छे; अने ते ज तेनी निवृत्ति छे. वळी सर्वने आ वातनो प्रत्यक्ष अनुभव छे, अथवा सर्वने प्रत्यक्ष अनुभव थई शके एवुं छे. क्रोधादि रोक्यां रोकाय छे, अने जे कर्मबंधने रोके छे, ते अकर्म-दशानो मार्ग छे. ए मार्ग परलोके नहीं, पण अत्रे अनुभवमां आवे छे, तो एमां संदेह शो करवो? १०४

छोडी मत दर्शन तणो, आग्रह तेम विकल्प;
कह्यो मार्ग आ साधशे, जन्म तेहना अल्प. १०५

आ मारो मत छे, माटे मारे वळगी ज रहेवुं, अथवा आ मारुं दर्शन छे, माटे गमे तेम मारे ते सिद्ध करवुं एवो आग्रह अथवा एवा विकल्पने छोडीने आ जे मार्ग कह्यो छे, ते साधशे, तेना अल्प जन्म जाणवा.

मोक्ष थवा सिवाय बीजी कोई इच्छा नथी, अने संसारना भोग प्रत्ये उदासीनता वर्ते छे; तेम ज प्राणी पर अंतरथी दया वर्ते छे, ते जीवने मोक्षमार्गनो जिज्ञासु कहीए, अर्थात् ते मार्ग पामवा योग्य कहीए. १०८

ते जिज्ञासु जीवने, थाय सद्गुरुबोध;
तो पामे समकितने, वर्ते अंतरशोध. १०९

ते जिज्ञासु जीवने जो सद्गुरुनो उपदेश प्राप्त थाय तो ते समकितने पामे, अने अंतरनी शोधमां वर्ते. १०९

मत दर्शन आग्रह तजी, वर्ते सद्गुरुलक्ष;
लहे शुद्ध समकित ते, जेमां भेद न पक्ष. ११०

मत अने दर्शननो आग्रह छोडी दई जे सद्गुरुने लक्षे वर्ते, ते शुद्ध समकितने पामे के जेमां भेद तथा पक्ष नथी. ११०

वर्ते निजस्वभावनो, अनुभव लक्ष प्रतीत;
वृत्ति वहे निजभावमां, परमार्थे समकित. १११

आत्मस्वभावनो ज्यां अनुभव, लक्ष अने प्रतीत वर्ते छे, तथा वृत्ति आत्माना स्वभावमां वहे छे, त्यां परमार्थे समकित छे. १११

वर्धमान समकित थई, टाळे मिथ्याभास;
उदय थाय चारित्रनो, वीतरागपद वास. ११२

ते समकित वधती जती धाराथी हास्य शोकादिथी जे कंई आत्माने विषे मिथ्याभास भास्या छे तेने टाळे, अने स्वभाव समाधिरूप चारित्रनो उदय थाय, जेथी सर्व रागद्वेषना क्षयरूप वीतरागपदमां स्थिति थाय. ११२

शुं प्रभुचरण कने धरुं, आत्माथी सौ हीन;
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तुं चरणाधीन. १२५

हुं प्रभुना चरण आगळ शुं धरुं? (सद्‌गुरु तो परम निष्काम छे; एक निष्काम करुणाथी मात्र उपदेशना दाता छे, पण शिष्यधर्मे शिष्ये आ वचन कह्युं छे.) जे जे जगतमां पदार्थ छे, ते सौ आत्मानी अपेक्षाए निर्मूल्य जेवा छे. ते, आत्मा तो जेणे आप्यो तेना चरणसमीपे हुं बीजुं शुं धरुं? एक प्रभुना चरणने आधीन वर्तुं एटलुं मात्र उपचारथी करवाने हुं समर्थ छुं. १२५

आ देहादि आजथी, वर्तो प्रभु आधीन;
दास, दास हुं दास छुं, तेह प्रभुनो दीन. १२६

आ देह, 'आदि' शब्दथी जे कंई मारुं गणाय छे ते, आजथी करीने सद्‌गुरु प्रभुने आधीन वर्तो, हुं तेह प्रभुनो दास छुं, दास छुं, दीन दास छुं. १२६

षट् स्थानक समजावीने, भिन्न बताव्यो आप;
ज्ञान थकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप. १२७[1]

छए स्थानक समजावीने हे सद्‌गुरु देव! आपे देहादिथी आत्माने, जेम म्यानथी तरवार जुदी काढीने बतावीए तेम स्पष्ट जुदो बताव्यो; आपे मपाई शके नहीं एवो उपकार कर्यो. १२७

---

१. आ 'आत्मसिद्धिशास्त्र' श्री सोभागभाई आदि माटे रच्युं हतुं ते आ वधारानी गाथाथी जणाशे.

श्री सुभाग्य ने श्री र्थ,
तथा भव्यहित साथ.

अत्रे एकांते निश्चयनय कह्यो नथी, अथवा एकांते व्यवहारनय कह्यो नथी; बेय ज्यां ज्यां जेम घटे तेम साथे रह्यां छे. १३२

गच्छमतनी जे कल्पना, ते नहि सद्व्यवहार;
भान नहीं निजरूपनुं, ते निश्चय नहि सार. १३३

गच्छ मतनी कल्पना छे ते सद्व्यवहार नथी, पण आत्मार्थीना लक्षणमां कही ते दशा अने मोक्षोपायमां जिज्ञासुनां लक्षण आदि कह्यां ते सद्व्यवहार छे; जे अत्रे तो संक्षेपमां कहेल छे. पोताना स्वरूपनुं भान नथी, अर्थात् जेम देह अनुभवमां आवे छे, तेवो आत्मानो अनुभव थयो नथी, देहाध्यास वर्ते छे, अने जे वैराग्यादि साधन पाम्या विना निश्चय पोकार्या करे छे, ते निश्चय सारभूत नथी. १३३

आगळ ज्ञानी थई गया, वर्तमानमां होय;
थाशे काळ भविष्यमां, मार्गभेद नहि कोय. १३४

भूतकाळमां जे ज्ञानीपुरुषो थई गया छे, वर्तमानकाळमां जे छे अने भविष्यकाळमां थशे, तेने कोईने मार्गनो भेद नथी, अर्थात् परमार्थे ते सौनो एक मार्ग छे; अने तेने प्राप्त करवा योग्य व्यवहार पण ते ज परमार्थसाधकरूपे देशकाळादिने लीधे भेद कह्यो होय छतां एक फळ उत्पन्न करनार होवाथी तेमां पण परमार्थे भेद नथी. १३४

सर्व जीव छे सिद्ध सम, जे समजे ते थाय;
सद्गुरुआज्ञा जिनदशा, निमित्त कारण मांय. १३५

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य;
होय मुमुक्षु घट विषे, एह सदाय सुजाग्य. १३८

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग अने वैराग्य ए गुणो मुमुक्षुना घटमां सदाय सुजाग्य एटले जाग्रत होय, अर्थात् ए गुणो विना मुमुक्षुपणुं न होय. १३८

मोहभाव क्षय होय ज्यां, अथवा होय प्रशांत;
ते कहीए ज्ञानीदशा, बाकी कहीए भ्रांत. १३९

मोहभावनो ज्यां क्षय थयो होय, अथवा ज्यां मोहदशा बहु क्षीण थई होय, त्यां ज्ञानीनी दशा कहीए, अने बाकी तो जेणे पोतामां ज्ञान मानी लीधुं छे, तेने भ्रांति कहीए. १३९

सकळ जगत ते एठवत्, अथवा स्वप्न समान;
ते कहीए ज्ञानीदशा, बाकी वाचाज्ञान. १४०

समस्त जगत जेणे एठ जेवुं जाण्युं छे, अथवा स्वप्न जेवुं जगत जेने ज्ञानमां वर्ते छे ते ज्ञानीनी दशा छे, बाकी मात्र वाचाज्ञान एटले कहेवामात्र ज्ञान छे. १४०

स्थानक पांच विचारीने, छठ्ठे वर्ते जेह;
पामे स्थानक पांचमुं, एमां नहि संदेह. १४१

पांचे स्थानकने विचारीने जे छठ्ठे स्थानके वर्ते, एटले ते मोक्षना जे उपाय कह्या छे तेमां प्रवर्ते ते पांचमुं स्थानक एटले मोक्षपद, तेने पामे.

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य;
होय मुमुक्षु घट विषे, एह सदाय सुजाग्य. १३८

दया, शांति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग अने वैराग्य ए गुणो मुमुक्षुना घटमां सदाय सुजाग्य एटले जाग्रत होय, अर्थात् ए गुणो विना मुमुक्षुपणुं न होय. १३८

मोहभाव क्षय होय ज्यां, अथवा होय प्रशांत;
ते कहीए ज्ञानीदशा, बाकी कहीए भ्रांत. १३९

मोहभावनो ज्यां क्षय थयो होय, अथवा ज्यां मोहदशा बहु क्षीण थई होय, त्यां ज्ञानीनी दशा कहीए, अने बाकी तो जेणे पोतामां ज्ञान मानी लीधुं छे, तेने भ्रांति कहीए. १३९

सकळ जगत ते एठवत्, अथवा स्वप्न समान;
ते कहीए ज्ञानीदशा, बाकी वाचाज्ञान. १४०

समस्त जगत जेणे एठ जेवुं जाण्युं छे, अथवा स्वप्न जेवुं जगत जेने ज्ञानमां वर्ते छे ते ज्ञानीनी दशा छे, बाकी मात्र वाचाज्ञान एटले कहेवामात्र ज्ञान छे. १४०

स्थानक पांच विचारीने, छट्ठे वर्ते जेह;
पामे स्थानक पांचमुं, एमां नहि संदेह. १४१

पांचे स्थानकने विचारीने जे छट्ठे स्थानके वर्ते, एटले ते मोक्षना जे उपाय कह्या छे तेमां प्रवर्ते ते पांचमुं स्थानक एटले मोक्षपद, तेने पामे.

छ पदनो पत्र मुंबई, फागण, १९५०

अनन्य शरणना आपनार एवा श्री सद्गुरुदेवने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार

शुद्ध आत्मस्वरूपने पाम्या छे एवा ज्ञानीपुरुषोए नीचे कह्यां छे ते छ पदने सम्यक्‌दर्शननां निवासनां सर्वोत्कृष्ट स्थानक कह्यां छे.

प्रथम पद : आत्मा छे. जेम घटपट आदि पदार्थो छे तेम आत्मा पण छे. अमुक गुण होवाने लीधे जेम घटपट आदि होवानुं प्रमाण छे, तेम स्वपरप्रकाशक एवी चैतन्यसत्तानो प्रत्यक्ष गुण जेने विषे छ एवो आत्मा होवानुं प्रमाण छे.

बीजुं पद : आत्मा नित्य छे. घटपट आदि पदार्थो अमुक काळवर्ती छे. आत्मा त्रिकाळवर्ती छे. घटपटादि संयोगे करी पदार्थ छे. आत्मा स्वभावे करीने पदार्थ छे; केमके तेनी उत्पत्ति माटे कोई पण संयोगो अनुभव योग्य थता नथी. कोई पण संयोगी द्रव्यथी चेतनसत्ता प्रगट थवा योग्य नथी, माटे अनुत्पन्न छे. असंयोगी होवाथी अविनाशी छे, केमके जेनी कोई संयोगथी उत्पत्ति न होय, तेनो कोईने विषे लय पण होय नहीं.

त्रीजुं पद : आत्मा कर्त्ता छे. सर्व पदार्थ अर्थक्रियासंपन्न छे. कंई ने कंई परिणामक्रियासहित ज सर्व पदार्थ जोवामां आवे छे. आत्मा पण क्रियासंपन्न छे. क्रियासंपन्न छे माटे कर्ता छे. ते कर्तापणुं त्रिविध श्री जिने विवेच्युं छे; परमार्थथी स्वभाव परिणतिए निज स्वरूपनो कर्त्ता छे. अनुपचरित (अनुभवमां आववायोग्य—विशेष

छ पदनो पत्र   मुंबई, फागण, १९५०

अनन्य शरणना आपनार एवा श्री सद्‌गुरुदेवने अत्यंत भक्तिथी नमस्कार

शुद्ध आत्मस्वरूपने पाम्या छे एवा ज्ञानीपुरुषोए नीचे कह्यां छे ते छ पदने सम्यक्‌दर्शननां निवासनां सर्वोत्कृष्ट स्थानक कह्यां छे.

प्रथम पद : आत्मा छे. जेम घटपट आदि पदार्थो छे तेम आत्मा पण छे. अमुक गुण होवाने लीधे जेम घटपट आदि होवानुं प्रमाण छे, तेम स्वपरप्रकाशक एवी चैतन्यसत्तानो प्रत्यक्ष गुण जेने विषे छे एवो आत्मा होवानुं प्रमाण छे.

बीजुं पद : आत्मा नित्य छे. घटपट आदि पदार्थो अमुक काळवर्ती छे. आत्मा त्रिकाळवर्ती छे. घटपटादि संयोगे करी पदार्थ छे. आत्मा स्वभावे करीने पदार्थ छे; केमके तेनी उत्पत्ति माटे कोई पण संयोगो अनुभव योग्य थता नथी. कोई पण संयोगी द्रव्यथी चेतनसत्ता प्रगट थवा योग्य नथी, माटे अनुत्पन्न छे. असंयोगी होवाथी अविनाशी छे, केमके जेनी कोई संयोगथी उत्पत्ति न होय, तेनो कोईने विषे लय पण होय नहीं.

त्रीजुं पद : आत्मा कर्त्ता छे. सर्व पदार्थ अर्थक्रियासंपन्न छे. कंई ने कंई परिणामक्रियासहित ज सर्व पदार्थ जोवामां आवे छे. आत्मा पण क्रियासंपन्न छे. क्रियासंपन्न छे माटे कर्त्ता छे. ते कर्त्तापणुं त्रिविध श्री जिने विवेच्युं छे; परमार्थथी स्वभाव परिणतिए निज स्वरूपनो कर्त्ता छे. अनुपचरित (अनुभवमां आववायोग्य–विशेष

छे. उपशम पामे छे, क्षीण थाय छे, माटे ते ज्ञान, दर्शन, संयमादि मोक्षपदना उपाय छे.

श्री ज्ञानीपुरुषोए सम्यक्‌दर्शनना मुख्य निवासभूत कह्यां एवां आ छ पद अत्रे संक्षेपमां जणाव्यां छे. समीपमुक्तिगामी जीवने सहज विचारमां ते सप्रमाण थवा योग्य छे; परम निश्चयरूप जणावा योग्य छे. तेनो सर्व विभागे विस्तार थई तेना आत्मामां विवेक थवा योग्य छे. आ छ पद अत्यंत संदेहरहित छे, एम परम पुरुषे निरूपण कर्युं छे. ए छ पदनो विवेक जीवने स्वस्वरूप समजवाने अर्थे कह्यो छे. अनादिस्वप्नदशाने लीधे उत्पन्न थयेलो एवो जीवनो अहंभाव, ममत्वभाव, ते निवृत्त थवाने अर्थे आ छ पदनी ज्ञानी पुरुषोए देशना प्रकाशी छे. ते स्वप्नदशाथी रहित मात्र पोतानुं स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे, तो सहज मात्रमां ते जागृत थई सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थाय; सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थई स्वस्वभावरूप मोक्षने पामे, कोई विनाशी, अशुद्ध अने अन्य एवा भावने विषे तेने हर्ष, शोक, संयोग, उत्पन्न न थाय. ते विचारे स्वस्वरूपने विषे ज शुद्धपणुं, संपूर्णपणुं, अविनाशीपणुं, अत्यंत आनंदपणुं, अंतररहित तेना अनुभवमां आवे छे. सर्व विभावपर्यायमां मात्र पोताने अध्यासथी ऐक्यता थई छे. तेथी केवळ, पोतानुं भिन्नपणुं ज छे. एम स्पष्ट, प्रत्यक्ष, अत्यंत प्रत्यक्ष, अपरोक्ष तेने अनुभव थाय छे. विनाशी अथवा अन्य पदार्थना संयोगने विषे तेने इष्ट-अनिष्टपणुं प्राप्त थतुं नथी. जन्म, जरा, मरण, रोगादि बाधारहित संपूर्ण माहात्म्यनुं ठेकाणुं एवुं निज स्वरूप जाणी, वेदी ते कृतार्थ थाय छे. जे जे पुरुषोने ए छ पद सप्रमाण एवां परम

छे. उपशम पामे छे, क्षीण थाय छे, माटे ते ज्ञान, दर्शन, संयमादि मोक्षपदना उपाय छे.

श्री ज्ञानीपुरुषोए सम्यक्‌दर्शनना मुख्य निवासभूत कह्यां एवां आ छ पद अत्रे संक्षेपमां जणाव्यां छे. समीपमुक्तिगामी जीवने सहज विचारमां ते सप्रमाण थवा योग्य छे; परम निश्चयरूप जणावा योग्य छे. तेनो सर्व विभागे विस्तार थई तेना आत्मामां विवेक थवा योग्य छे. आ छ पद अत्यंत संदेहरहित छे, एम परम पुरुषे निरूपण कर्युं छे. ए छ पदनो विवेक जीवने स्वस्वरूप समजवाने अर्थे कह्यो छे. अनादि-स्वप्नदशाने लीधे उत्पन्न थयेलो एवो जीवनो अहंभाव, ममत्वभाव, ते निवृत्त थवाने अर्थे आ छ पदनी ज्ञानी पुरुषोए देशना प्रकाशी छे. ते स्वप्नदशाथी रहित मात्र पोतानुं स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे, तो सहज मात्रमां ते जागृत थई सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थाय; सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थई स्वस्वभावरूप मोक्षने पामे, कोई विनाशी, अशुद्ध अने अन्य एवा भावने विषे तेने हर्ष, शोक, संयोग, उत्पन्न न थाय. ते विचारे स्वस्वरूपने विषे ज शुद्धपणुं, संपूर्णपणुं, अविनाशी-पणुं, अत्यंत आनंदपणुं, अंतररहित तेना अनुभवमां आवे छे. सर्व विभावपर्यायमां मात्र पोताने अध्यासथी ऐक्यता थई छे. तेथी केवळ, पोतानुं भिन्नपणुं ज छे. एम स्पष्ट, प्रत्यक्ष, अत्यंत प्रत्यक्ष, अपरोक्ष तेने अनुभव थाय छे. विनाशी अथवा अन्य पदार्थना संयोगने विषे तेने इष्ट-अनिष्टपणुं प्राप्त थतुं नथी. जन्म, जरा, मरण, रोगादि बाधारहित संपूर्ण माहात्म्यनुं ठेकाणुं एवुं निज स्वरूप जाणी, वेदी ते कृतार्थ थाय छे. जे जे पुरुषोने ए छ पद सप्रमाण एवां परम

छे. उपशम पामे छे, क्षीण थाय छे, माटे ते ज्ञान, दर्शन, संयमादि मोक्षपदना उपाय छे.

श्री ज्ञानीपुरुषोए सम्यक्‌दर्शननां मुख्य निवासभूत कह्यां एवां आ छ पद अत्रे संक्षेपमां जणाव्यां छे. समीपमुक्तिगामी जीवने सहज विचारमां ते सप्रमाण थवा योग्य छे; परम निश्चयरूप जणावा योग्य छे. तेनो सर्व विभागे विस्तार थई तेना आत्मामां विवेक थवा योग्य छे. आ छ पद अत्यंत संदेहरहित छे, एम परम पुरुषे निरूपण कर्युं छे. ए छ पदनो विवेक जीवने स्वस्वरूप समजवाने अर्थे कह्यो छे. अनादि-स्वप्नदशाने लीधे उत्पन्न थयेलो एवो जीवनो अहंभाव, ममत्वभाव, ते निवृत्त थवाने अर्थे आ छ पदनी ज्ञानी पुरुषोए देशना प्रकाशी छे. ते स्वप्नदशाथी रहित मात्र पोतानुं स्वरूप छे, एम जो जीव परिणाम करे, तो सहज मात्रमां ते जागृत थई सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थाय; सम्यक्‌दर्शनने प्राप्त थई स्वस्वभावरूप मोक्षने पामे, कोई विनाशी, अशुद्ध अने अन्य एवा भावने विषे तेने हर्ष, शोक, संयोग, उत्पन्न न थाय. ते विचारे स्वस्वरूपने विषे ज शुद्धपणुं, संपूर्णपणुं, अविनाशी-पणुं, अत्यंत आनंदपणुं, अंतररहित तेना अनुभवमां आवे छे. सर्व विभावपर्यायमां मात्र पोताने अध्यासथी ऐक्यता थई छे. तेथी केवळ, पोतानुं भिन्नपणुं ज छे. एम स्पष्ट, प्रत्यक्ष, अत्यंत प्रत्यक्ष, अपरोक्ष तेने अनुभव थाय छे. विनाशी अथवा अन्य पदार्थना संयोगने विषे तेने इष्ट-अनिष्टपणुं प्राप्त थतुं नथी. जन्म, जरा, मरण, रोगादि बाधारहित संपूर्ण माहात्म्यनुं ठेकाणुं एवुं निज स्वरूप जाणी, वेदी ते कृतार्थ थाय छे. जे जे पुरुषोने ए छ पद सप्रमाण एवां परम

स्वच्छंद मटे, अने सहजे आत्मबोध थाय एम जाणीने जे भक्तिनुं निरूपण कर्युं छे ते भक्तिने अने ते सत्पुरुषोने फरी फरी त्रिकाळ नमस्कार हो !

जो कदी प्रगटपणे वर्तमानमां केवळज्ञाननी उत्पत्ति थई नथी, पण जेना वचनना विचारयोगे शक्तिपणे केवळज्ञान छे एम स्पष्ट जाण्युं छे, श्रद्धापणे केवळज्ञान थयुं छे, विचारदशाए केवळज्ञान थयुं छे, इच्छादशाए केवळज्ञान थयुं छे, मुख्य नयना हेतुथी केवळज्ञान वर्ते छे. ते केवळज्ञान सर्व अव्याबाध सुखनुं प्रगट करनार, जेना योगे सहज मात्रमां जीव पामवा योग्य थयो, ते सत्पुरुपना उपकारने सर्वोत्कृष्ट भक्तिए नमस्कार हो ! नमस्कार हो !